स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 9 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 मार्च 2022 ✦ वर्ष 10 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

भगवान महावीर की 2621वीं जयन्ती की मंगल कामना

TAILOR MADE **SOLUTIONS** FOR DIVERSE **INDUSTRY NEEDS**

MEI POWER PRIVATE LIMITED

MARSON'S
AGRA, INDIA

25 KVA to 14 MVA
Type Tested as per
BIS Level 3 & 2 / IEC & IS

संस्थापक - स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त, 1927 - 31 अगस्त, 2016)

आपका स्नेह, सेवाभाव, समाज की प्रगति की भावना, उच्च विचार एवं
प्रेरणादायक जीवन सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

MEI POWER PRIVATE LIMITED

Correspondence: 1/189 Delhi Gate, Civil Lines, **Agra - 282 002 (INDIA)**
Ph: +91 562 2520027, +91 562 2850812
Works: Mathura Road, Artoni, **Agra - 282 007 (INDIA)**
Ph: +91 90277 09944, +91 92580 78803
info@marsonselectricals.com   www.marsonselectricals.com

9001 14001 MIDEL ENERGY IS LIFE CONSERVE IT CE EU Directives

Transformers | EPC Contractor | Renewable Energy Solutions

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 9 ✦ 25 मार्च 2022 ✦ वर्ष 10

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा सै, सम्प्रति जयपुर सै प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

आज के प्रगतिशील युग में हर व्यक्ति समाज, देश, अपने आपको विकसित करने की प्रतिस्पर्धा में लिप्त होकर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित करने में लगा है, वह सदा अपने आपको सर्वश्रेष्ठ मानता है दूसरों के कथन अथवा करनी पर उसे रस नहीं आता है।

पल्लीवाल समाज के लिये भी गर्व की बात है कि आज हमारा समाज धन, बुद्धि, कौशल एवं कला में अग्रणी है लेकिन क्या इस प्रगतिशीलता की अन्य स्थानों एवं समाज में प्राथमिकता मिलती है, तो इसका उत्तर हमें नहीं के बराबर मिलेगा। इसका मुख्य कारण हम अपने संगठन को इतना मजबूत नहीं बना पाये जिससे अन्य लोग हमारे प्रति आकर्षित होवें। बल्कि हम स्वयं एक दूसरे के विकास, अथवा किये गये कार्यों पर समाज में बैठकर आलोचना करते हैं। हो सकता है कोई व्यक्ति विशेष कोई अच्छा कार्य करता है तो उसे सभी लोग सम्मानित करते हैं लेकिन उसके पीछे की भावना क्या होती है यह विचारणीय विषय है। आज शहरों में बड़ी संख्या में सामाजिक बन्धु गांवों से आकर बस गये हैं। उन्होंने अपने आपको सक्षम भी बनाया है लेकिन समाज में अपने आपको पदस्थापित करने में वे उस शहर के पूर्व योगदानकर्त्ताओं को नकारने का कार्य करते हैं। उसी का परिणाम है कि चाहे समाज के चुनाव हों, चाहे युवक मण्डल अथवा महिला मण्डल, व्यक्ति अपने अहंकार एवं पदस्थापना हेतु कुछ भी करने से नहीं कतराता है जबकि होना यह चाहिये कि हमें अपने समाज को सुदृढ़ एवं संगठित बनाने में योगदान देना चाहिये और संगठित होकर स्थानीय जैन समाज के साथ-साथ सोसाइटी में अपने आपको स्थापित करना चाहिये। समाज के सभी बन्धुओं को अपना-अपना योगदान देना चाहिये। अपितु किसी भी कार्य की परिणति एक टीम वर्क्स के साथ हो सकती है और उसके लिये हमें त्याग एवं सकारात्मक सोच के साथ सभी वर्गों को साथ लेकर संगठन को मजबूत बनाना चाहिये। यह नहीं होना चाहिए कि मेरी बात मान ली तो सब ठीक और नहीं मानी तो सब बेकार।

आने वाले कुछ माह बाद महासभा एवं कई शाखाओं में भी चुनाव होने हैं, हमें अभी से उन प्रक्रियाओं को ध्यान रखना होगा और समाज को एकजुटता से नई दिशा देनी होगी। आइये बंधुओं, हम सब मिलकर एक होकर अपने समाज को अग्रज बनाये, आपके पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन की आशा के साथ...

-चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

भावभीनी श्रृद्धांजलि

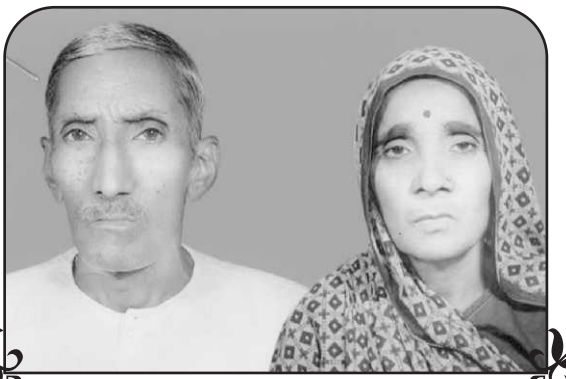

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास :
बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

प्रकृति से मनुष्य बनें

मानव जीवन अत्यन्त दुष्कर है। चिरकाल के बाद भी मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है। उससे भी कहीं अधिक दुर्लभ है मानवता को प्राप्त करना। स्वयं के अस्तित्व और जीवन के समस्त आनंदको दांव पर लगाकर ही कोई व्यक्ति मानवता को उपलब्ध हो सकता है। मानवता और महानता, करुणा, प्रेम और मैत्री पर निर्भर करती है, तोप, तीर, तलवार, तमंचे पर नहीं। मैत्री का पौधा वह जंगली पौधा नहीं जो पहाड़ की सूखी चट्टान पर स्वयं पैदा हो जाये। यह तो मनुष्य के नंदनवन का वह सुकुमार पुष्प है जिसे सदा माली के उदार प्रेम की आवश्यकता होती है।

मनुष्य परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। वह प्राणी जगत में शिरोमणि है। उसके समक्ष सभी प्राणी बौने हैं। वह बीज रूप परमात्मा है। मनुष्य चलता-फिरता मात्र एक पुतला नहीं वरन् अनंत संभावना का पुंज है। वह असीम शक्ति का धनी व विराट सत्ता का स्वामी है। वह स्वतंत्रता का जनक और जगत का दृष्टा है। कवि शेक्सपियर के निम्नांकित शब्द मनुष्य की महत्ता बतलाते हैं-

'मनुष्य भी एक कितनी अद्‌भुत रचना है।
बुद्धि में कितना श्रेष्ठ, शक्ति में कितना असीम
रूप और चाल में कितना सुन्दर, सराहनीय
व्यवहार में कितना देवसम और अनुभूति में ईश्वर के तुल्य
सृष्टि का सौन्दर्य, जीवों में शिरोमणि।'

किन्तु आज मनुष्य की जो स्थिति है उसे देखकर उसकी इस तरह की संभावनाओं, उसकी उत्कृष्टताओं, महानताओं पर प्रश्न-चिन्ह लग जाता है, क्योंकि उसके विचार और व्यवहार में जो बदलाव आया है (आ रहा है) वह किसी से अनजाना नहीं है। आज वह मानवीय गुणों का परित्याग कर स्वार्थी व धूर्त-कपटी हो गया है। उसके हृदय में करुणा के स्रोत सूख गये, प्रेम से रहना और मिल-बांट कर खाना, यह भावना उसके मन से पलायन कर गई है। वह दूसरों को दलदल में ढकेलकर एकाकी सुख भोगना चाहता है। उसकी यह स्वार्थपरता उसे पशुसे भी बदतर बना देती है।

पतन सिर्फ मनुष्य का हुआ है। पशु की पशुता एवं देवों की दिव्यता आज भी सलामत है किन्तु मानव की मानवता खत्म हो गई है और बची खुची मानवता को चहुं ओर भयानक खतरा है। यह खतरा पशु की पशुता से हो या देवों की दिव्यता से हो, ऐसी बात नहीं है। वह खतरा मुखौटे में आच्छादित कोरी मानवता से है।

आज विश्व में प्रति सैकंड तीन व्यक्ति और प्रतिदिन लगभग ढाई लाख व्यक्ति (स्त्री, पुरुष) पैदा हो रहे हैं। क्या पैदा होने वाले सभी मनुष्य हैं? क्या वे मानवीय गुणों से युक्त हैं। मानवता किस चिड़िया का नाम है, क्या उन्हें पता है? जी नहीं। मनुष्य आकृति से होना एक बात है और प्रकृति से होना दूसरी बात है। पैदा होने वाले आकृति से सभी मनुष्य जैसे होते हैं और प्रकृति से कोई श्वान है, कोई सिंह है, कोई सियार है, कोई भालू है, कोई कुछ है, कोई कुछ है। आकृति मात्र से मनुष्य होने से मानवता नहीं मिल जाती। जब व्यक्ति प्रकृति से मानव होता है तब मानवता को उपलब्ध होता है। मानवता को प्राप्त करना ही मानव का लक्ष्य है। इसके लिए जरूरी होता है कि वह सिर्फ आकृति से ही नहीं, प्रकृति से भी मनुष्य बने।

यद्यपि मनुष्य परमात्मा का एकमात्र प्रिय पुत्र है। परन्तु परमात्मा की धमनियों पर असि प्रहार भी इसी ने किया है। वह परमात्मा की आँखों में धूल झोंककर अपने पापों को अप्रत्याशित रखना चाहता है। पर शायद उसे पता नहीं है कि पाप और पारा कभी पचता नहीं है। खुद और खुदा से कुछ भी छिपा नहीं है।

जब परमात्मा इस सृष्टि के क्षितिज पर सूर्य की भांति चमकता है, तब भी यह विवेकशील माना जाने वाला मूढ मनुष्य मोह अंधकार में बैठकर उल्लू की भांति पाप-पंक में ही संलग्न रहता है। भगवान महावीर स्वामी ने कहा- मानव जीवन अत्यन्त दुष्कर है। चिरकाल के बाद भी मनुष्य जन्म

मिलना दुर्लभ है। उससे भी कहीं अधिक दुर्लभ है मानवता को प्राप्त करना। स्वयं के अस्तित्व और जीवन के समस्त आनंद को दांव पर लगाकर ही कोई व्यक्ति मानवता को उपलब्ध हो सकता है। मानवता और महानता, करुणा, प्रेम और मैत्री पर निर्भर करती है। तोप, तीर, तलवार, तमंचे पर नहीं। मैत्री का पौधा वह जंगली पौधा नहीं जो पहाड़ की सूखी चट्टान पर स्वयं पैदा हो जाये। यह तो मनुष्य के नन्दनवन का वह सुकुमार पुष्प है जिसे सदा माली के उदार प्रेम की आवश्यकता होती है।

जब स्वार्थ आगे के दरवाजे से प्रवेश करता है, तब मित्रता पीछे के द्वार से पलायन कर जाती है। स्वार्थी व्यक्ति मैत्री के मूल्य को नहीं पहचान सकता। अपने स्वार्थ में लिप्त व्यक्ति स्वयं से साक्षात्कार नहीं कर सकता। जब वह उदार बनकर दूसरों के हितों में सोचता है तब वह मानवता की कसौटी पर खरा उतरता है। अच्छा आदमी सबकी अच्छाई सोचता है और भलाई करता है। टालस्टाय ने अच्छे आदमी की परिभाषा बताते हुए लिखा, 'अच्छा आदमी वह नहीं जो सामर्थ्यवान है, साधन सम्पन्न है, अपितु अच्छा आदमी वह है, जिसके पास दो कोट हैं और वह एक कोट उस व्यक्ति को दे देता है जिसे उसकी आवश्यकता है।' मनुष्य को ईश्वरप्रदत्त विलक्षणताओं व प्रतिभाओं का उपयोग जन-जन की सेवा व परोपकार में करना चाहिए। मानवता व महानता की कसौटी यही है कि मनुष्य अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ व परमार्थ के लिए जिए। लेकिन आज मनुष्य की दशा यह है कि वह जिस थाली में खाता है उसी में छेद करता है, जिसका नमक खाता है उसी के साथ नमकहरामी करता है।

इस संदर्भ में मैंने बचपन में एक कहानी पढ़ी थी, वही आपसे कहता हूँ- एक गहन वन में विशाल वृक्ष था। एक बंदर आकर प्रायः उस पर बैठा करता था। एक बार मोर, कबूतर, तोता, मैना, कौआ आदि कई पक्षी भी इधर-उधर से आकर वहां आ बैठे। आमोद-प्रमोद की बात चल रही थी कि बंदर ने कहा- इस धरातल की समस्त योनियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मोर ने बन्दर की बात का समर्थन करते हुए कहा- इसमें किसी के दो मत नहीं है। कबूतर ने बात में रस उड़ेला- मोक्ष जाने का एकमात्र अधिकारी मनुष्य ही तो है। तोता कब चुप बैठने वाला था, वह भी बोल पड़ा- हम सब तो पामर प्राणी हैं। हमें तो पेट भरने के सिवाय दूसरा काम भी क्या है? कोयल ने कहा- हाँ बात तो सही है, इस चराचर जगत का रक्षक तो वास्तव में मनुष्य ही है। मैना ने भी उसे बुद्धिशाली बताते हुए उसकी शत-प्रतिशत श्रेष्ठता सिद्ध की। सबने मनुष्य के गीत गाये और कौआ अभी भी मौन था। उसे इस प्रकार मौन देखकर कोयल ने पूछा- भैया! तुम मौन क्यों हो? उच्छवास फेंकते हुए कौए ने कहा- क्या करूं बहन, मेरी राय इन सबसे भिन्न है क्योंकि इन सबका मत है कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है लेकिन मेरा मानना है कि उसके जैसा कोई निकृष्ट और अधम प्राणी नहीं है। कौए की बात सुनकर सब बौखला उठे। सभी ने कौए की भर्त्सना की और उसको यह कहते हुए कि तुम हमारी गोष्ठी में बैठने लायक नहीं हो, सभा से निकाल दिया।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक ऐसा प्रसंग आया कि एक मनुष्य बुरी तरह से भागता हुआ, घबराया हुआ आ रहा था क्योंकि उसके पीछे एक शेर लगा हुआ था।

बंदर को देखकर दया आ गई। उसने मनुष्य को अपने पास बुला लिया। मनुष्य ने पेड़ पर चढ़कर सुख की सांस ली। शेर अपना शिकार गया देख उदास हो गया। उसने बंदर को अपनी ओर खींचते हुए कहा- भाई, हम सब तो वनचर हैं। संकट में एक-दूसरे के काम आते हैं। यह मनुष्य गाँव का है। हमारा कोई सगा तो लगता नहीं है, इसलिए इसे मेरा शिकार समझकर नीचे धकेल दो। मेरा पेट भर जायेगा, मैं तुम्हारा आभार मानता हुआ चला जाऊंगा। बंदर ने आगत मनुष्य को अतिथि समझते हुए धकेलने से मना कर दिया।

ऊपर मनुष्य बैठा था। नीचे शेर बैठा था। उधर बंदर को कुछ नींद-सी आ गई। शेर ने पैंतरा बदला और मनुष्य से कहा- भाई, मुझे तो पेट भरना है। तू हो या बंदर, इससे क्या फर्क पड़ता है। अच्छा होगा तू इस बंदर को नीचे धकेल दे, मैं अपना काम पूरा समझकर अपने स्थान की ओर चला जाऊंगा। शेर ने कहा- तू हिचक मत। अरे भाई, जरा यह भी तो सोच कि यह मर भी गया तो इसके पीछे कौन रोने वाला है, तू मर गया तो तेरे पीछे तेरे बाल-बच्चे हैं। उनका क्या होगा? सारा घर-बार बिखर जायेगा। मैं तो भूखा जाने वाला

हूँ नहीं। तू ऊपर कितने दिन तक बैठा रहेगा?

शेर की बात सुनकर मनुष्य का मन पसीज गया। वह अपनी औकात पर उतर आया और उसने बंदर को धक्का दे दिया। बंदर ज्यों ही नीचे गिरा उसकी नींद खुल गई और उसने गिरते-गिरते वृक्ष की दूसरी शाखा पकड़ ली। शेर तो खाली हाथ ही रह गया। इसलिए उसने फिर दूसरी चाल चली। बंदर से कहा- देख ली मनुष्य की करतूत! तूने ही इसे बचाया और यह तुझे ही नीचे धकेलने को उतारू हो गया। मूर्ख वानर! अब भी समझ। क्या देखता है, इसे नीचे गिरा कर अपना बदला क्यों नहीं ले लेता? बंदर ने सहजता से कहा- मैं जान गया कि इसने मेरे साथ क्या किया है। पर इतनी नीचता मनुष्य ही कर सकता है, मैं नहीं। हां, इतना अवश्य है कि अपनी जात-बिरादरी की गोष्ठी बुलाकर उस कौए को अवश्य धन्यवाद दूंगा जिसने हमें पहले से ही मनुष्य से सावचेत रहने को कहा था। यह मनुष्य का चरित्र है, स्वभाव है, उसकी आदत है कि वह कभी उपकारी के साथ उदारता का परिचय नहीं देता। अपना उल्लू सीधा करने के लिए वह इतने निम्न स्तर पर उतर जाता है जो कहानी से स्पष्ट होता है। तभी तो किसी ने मनुष्य पर व्यंग्य कसते हुए कहा-

एक कुत्ते ने
दूसरे कुत्ते से कहा,
क्यों रे! तुझे शर्म नहीं आती,
चोरों के द्वारा फेंका गया
एक रोटी का टुकड़ा खाकर,
चोरों का साथ दिया है,
मालिक के साथ विश्वासघात किया है,
और कुत्ते की जात को बदनाम किया है।
तुझे इसका दण्ड दिया जाएगा
कुत्तों की जात से बाहर किया जाएगा।
तेरे इस कृत्य से,
सारे कुत्ते घबरा गये हैं।
तू कुत्ता नहीं रहा
क्योंकि अब तुझमें
मानव के गुण आ गये हैं।

मनुष्य जीवन विषाक्त हो गया है। उसकी विष-क्षमता के समक्ष विषैले जानवरों व पक्षियों की विष-क्षमता बौनी पड़ जाती है। एक श्वेताम्बर जैन ग्रन्थ में उल्लेख मिलता है कि गौतम ने महावीर से कहा- भंते! आपने बताया कि जाति आशीविष चार प्रकार के होते हैं- वृश्चिक, मेढ़क, सर्प और मनुष्य। अब मैं जानना चाहता हूँ कि इनके विष का प्रभाव कितने क्षेत्र में होता है। महावीर ने कहा- गौतम! बिच्छू अपने विष के प्रभाव से लगभग दो सौ तिरेसठ योजन क्षेत्रकों विष परिणत कर सकता है। मेढ़क के विष का प्रभाव क्षेत्र इससे दुगुना है। सर्प लाख योजन प्रमाण शरीर को विष परिणत कर सकता है। मनुष्य जातीय आशीविष का प्रभाव क्षेत्र पैंतालीस लाख योजन प्रमाण शरीर है। यह है मनुष्य की विषात्मक क्षमता! एक मनुष्य चाहे तो सम्पूर्ण मानव क्षेत्र को विषमय कर सकता है। इतना विषैला होता है मनुष्य। उसके विष के सामने सारे विष कमजोर पड़ जाते हैं।

अस्पताल के सामने सूचना बोर्ड टंगा हुआ था। उस पर लिखा था- एक आदमी को एक पागल कुत्ते ने काटा है। उसके आगे परिणाम लिखा था- चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, 14 इंजेक्शन लगेंगे, ठीक हो जायेगा। दूसरे नम्बर पर था- एक आदमी को काले नाग ने काटा है... स्थिति गंभीर है, फिर भी बचने की उम्मीद है। तीसरे नम्बर पर जो लिखा था वह कुछ अद्भुत था। लिखा था- एक आदमी को आदमी ने काटा है। आगे लिखा था- बचने की कोई उम्मीद नहीं है।

मनुपुत्र कहे जाने वाले मनुष्य का इतना बड़ा अपमान? घोर उपेक्षा। आखिर क्यों? कारण स्पष्ट है- मनुष्य ने अपनी मर्यादा व नैतिकता को तिलांजलि दे दी है। वह सिर्फ आकृति से मनुष्य है, प्रकृति से नहीं। यह उपेक्षा आकृति से जो मनुष्य हैं, उनकी है। जो प्रकृति से मनुष्य हुए उन्हें सारी दुनिया सिर आंखों पर रखती है। जिन्होंने प्रकृति का जीवन जिया, उन्हें दुनिया बुद्ध, महावीर, राम, कृष्ण, क्राइस्ट के नाम से जानती है। मनुष्य और मानवता को उपलब्ध करना- दोनों में बड़ा भारी अन्तर है। मनुष्य महान केवल वैभव और सत्ता से नहीं बनता बल्कि महानता की कसौटी होती है, मानवीय गुणों को जीवन में स्थान देना, दूसरों की पीड़ा को पहचानना और उसे

दूर करने की दिशा में ठोस कदम उठाना। मनुष्य अपने जीवन में सफलता तभी प्राप्त कर सकता है जब वह ईर्ष्या, अहंकार, दुराचरण, कामना व स्वार्थपरक वृत्तियों को त्यागकर त्यागमय जीवन जिए व प्राणीमात्र के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास करें क्योंकि स्वार्थ व ईर्ष्या की आग आंतरिक और अति गहरी होती है। इससे मनुष्य दूसरों के कल्याण की अपेक्षा उनके अशुभ व अहित की ज्यादा सोचता है। और इस प्रकार सोचकर वह स्वयं अपने लिए भावी दुःख को बुलावा दे देता है। यानी अपने हाथों से अपने पांवों पर कुठाराघात करता है और फिर रोता है। जिस प्रकार दीमक कपड़े और कागज को कुतर-कुतर कर खा जाती है उसी प्रकार स्वार्थ व ईर्ष्या मनुष्य के आन्तरिक जीवन को कुतर-कुतर कर खोखला बना देती है।

महात्मा बुद्ध ने कहा- संसार में नाना दुःख हैं। मनुष्य तृष्णा को त्यागे तो दुःख से बचे। भगवान महावीर ने कहा- लोभ का गड्ढा दुष्पूर है। लोभ के गड्ढे में पड़ा सम्पूर्ण विश्व एक अणु के समान मालूम पड़ता है। इच्छाएं अनंत हैं। आकांक्षाओं को छूना आकाश को छूने से भी दुष्कर है। जब तक हम कामनाओं व वासनाओं के जाल से मुक्त नहीं होंगे, अतृप्त ही बने रहेंगे।

परिवार नियोजन अधिकारी एक सेठ के पास गये। अपना परिचय देते हुए पूछा सेठ साहब, आपकी कितनी संतान हैं? सेठ ने कहा- सात। अधिकारी ने कहा- अब तो आपको परिवार नियोजन करा लेना चाहिए। सेठ ने कहा कि नहीं, यह फिलहाल संभव नहीं है। अधिकारियों ने आश्चर्य करते हुए पूछा- क्यों? सेठ बोला- क्योंकि ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की है कि तुम्हारा तेरहवां पुत्र मंत्री बनेगा।

सेठ इस आशा-विश्वास पर जी रहा है कि उसका तेरहवां पुत्र मंत्री बनेगा, भले ही तेरहवां पुत्र होने से पूर्व ही उसकी तेरई मन जाए। मनुष्य बहिर्मुखी हो गया है। सुख का अनंत सागर स्वयं में हिलोरें मार रहा है परन्तु जैसे चम्मच कड़ाही में रहकर भी मिठाई का स्वाद नहीं जानता वैसे ही यह आत्मा अपने आत्मिक आनंद का अनुभव नहीं करता। बाह्य में खोजता है आनंद को, यही तो भूल है मानव की। सेठ तेरहवें पुत्र का सपना देख रहा है। कितना बड़ा लोभ पाल रहा है जीवन में। मनुष्य को चाहिए कि वह असीम इच्छाओं को नियंत्रित करते हुए, जनजन के कल्याण व प्राणी मात्र के अभ्युदय हेतु संकल्पित हो। स्वार्थवृत्ति को छोड़कर औरों के लिए जीना व मरना सीखे। यही मानवता की कसौटी है। इस सम्बन्ध में मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां कितनी प्रेरणास्पद हैं-

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी।
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी॥
हुई न यो सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए।
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए॥
यही पशु प्रकृति है कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥
चले अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़े उन्हें ढकेलते हुए॥
घटे न हेल-मेल हां बढे न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के, सतर्क पान्थ हो सभी॥
यही समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे।
वही मनुष्य कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

हर मनुष्य अपने कर्तव्य व दायित्व को पहचाने और दूसरे के दुःख दर्द में सहभागी बने, दीन दुःखी, पीड़ित, दलित व उपेक्षित व्यक्तियों की सेवा करने वाला देव मानव माना जाता है जबकि औरों को कष्टग्रस्त देखकर आनंद की अनुभूति करने वाला वनमानुष। जब पृथ्वी पर देवमानुष की संख्या बढ़ती है तब धरती स्वर्गोपम को धारण करती है और वनमानव से नरकोपम को। दीन-दुखियों की उपेक्षा करके कोई भी व्यक्ति धर्म की आत्मा को नहीं समझ सकता। दीनों की सेवा विश्व का सर्वोपरि धर्म है।

चेतना-पुंज मानव का यह परम कर्तव्य है कि अपने सुख के साथ-साथ औरों के सुख में भी कारण बने और इसके लिए यह निहायत जरूरी है कि मनुष्य सिर्फ आकृति से ही नहीं, प्रत्युत प्रकृति से भी मनुष्य बने और मानवता का परिचय दे। ईश्वर का प्रिय पुत्र होने का गौरव जो उसे मिला है, उसे अपने दुष्कर्मों से लांछित न करे।

-मुनि तरूण सागर जी

साभार : 'दुःख से मुक्ति कैसे मिले?'

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति द्वारा संचालित छात्रावास प्रारम्भ

पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति जयपुर, द्वारा संचालित सेठ रतनलाल सरबती जैन (दांतिया वाले) छात्रावास एच-1, एच-2, शिव ऑफिसर्स (आर.ए.एस.) कॉलोनी , पानी की टंकी के सामने, जगतपुरा, जयपुर में छात्राओं के लिए प्रारंभ किया जा चुका है। इस छात्रावास में 32 छात्राओं के निवास की व्यवस्था है।

★ छात्रावास में छात्राओं के लिए 16 कमरे लेट-बाथ अटेच का निर्माण किया गया है, हर कमरे के साथ बालकोनी दी गई है। गरम पानी के लिए बाथरूमों में गीजर लगाये गये हैं।

★ छात्राओं के भोजन-चाय-पानी, नाश्ते के लिए एक भोजनशाला का भी निर्माण किया गया है। स्वरक्षा हेतु सम्पूर्ण भवन में सीसीटीवी कैमरे लगाये गये हैं। चौबीसों घंटे स्वरक्षा गार्ड भवन की देख-रेख में संलग्न रहेंगे। छात्राओं की समस्या समाधान के लिए महिला वार्डन चौबीसों घंटे भवन में ही उपलब्ध रहेंगी एवं प्रबन्धन सतत रूप से निगरानी पर रहेगा।

★ समाज की जो छात्रायें जयपुर में उच्च शिक्षा, कम्पीटिशन आदि की तैयारी हेतु दूर-दराज से आती हैं यह व्यवस्था उनके लिए प्राथमिकता से की गई है।

★ छात्रावास के हर कमरे में दो छात्रायें रहेंगी जिनके लिए हर कमरे में 3×6 के दो पलंग गद्दे सहित लगाये गए हैं, दो भाग वाली एक आलमारी लगाई गई है, जिसमें छात्रायें अपना-अपना उपयोगी सामान रख सकेंगी जिसकी चाबी उन्हीं के पास रहेगी। हर छात्रा के लिए टेबिल व कुर्सी कमरे में लगाई गई है।

★ पीने के पानी के लिए केम्पर दिया जायेगा। छात्रावास में 100-100 लीटर के दो वाटर प्यूरीफायर लगाये गये हैं।

★ बाथरूम में स्नान हेतु बाल्टी, मग, पट्टा, कपड़े टांगने के लिए खूंटी, शीशा आदि की व्यवस्था की गई है। हर बालकोनी में कपड़े सुखाने के लिए अलगनी बांधी गई है।

★ गद्दे पर बिछाने के लिए चद्दर, तकिया, ओढ़ने के लिए रजाई, कम्बल, चद्दर छात्राओं को अपने साथ ही लानी होगी।

★ समाज के सभी बंधुओं से निवेदन है कि यदि उनकी बच्ची जयपुर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने या कम्पीटिशन की तैयारी के लिए आती हैं तो वह इस छात्रावास की सुविधा का लाभ उठा सकती हैं।

★ छात्रावास में दाखिले के समय **दस हजार रुपये सिक्योरिटी के देने होंगे** जो छात्रावास छोड़ने पर वापिस लिये जा सकते हैं। हर महीने रु. 3,000/- खाने, नाश्ते आदि के लिये जायेंगे तथा रु. 1,500/- प्रतिमाह छात्रावास की बिजली पानी व मेंटीनेंस देने होंगे।

★ दाखिले के समय एक फार्म भरना आवश्यक होगा जिसमें छात्रावास के नियम भी लिखे हैं आपसे अनुरोध है कि इन्हें अवश्य पढ़ लें। नियमों की पालना करना छात्रा व उनके अभिभावक को अनिवार्य होगा।

★ छात्रावास की सुविधा प्राप्त करने के लिए महामंत्री, पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति से सम्पर्क किया जा सकता है।

अशोक कुमार जैन
महामंत्री पल्लीवाल जैन शिक्षा समिति
2-बी, रामद्वारा कॉलोनी, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर, मो.: 9414047684

ओम प्रकाश जैन, *एडवोकेट*
छात्रावास प्रभारी
संस्था कार्यालय : सी-22, दांतिया हाऊस, इन्द्रपुरी, लाल कोठी, जयपुर, फोन : 0141-2742467, 9314966351

श्री 1008 श्री चन्द्रप्रभु पल्लीवाल जैन यात्रा संघ जयपुर

संघ द्वारा होली के पावन पर्व पर 17 मार्च से 21 मार्च तक चार दिवसीय केसरिया यात्रा का शुभारम्भ अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के अध्यक्ष श्रीमान आर.सी. जैन साहब (सेनि. आई.ए.एस.) एवं श्री महेश जैन झोटवाड़ा वालों ने पचरंगा झंडा दिखा कर रवाना की गई। यात्रा में कुल 38 यात्री थे। जिनमें 25 महिला एवं 13 पुरुष और 3 छोटे-छोटे बच्चे थे। 17 मार्च को सायं 8 बजे शक्ति नगर जैन मंदिर पर सभी यात्रियों ने सामूहिक आरती कर नवकार महामंत्र का जाप किया। इसके पश्चात सभी मंदिर जी से पैदल जयकारे लगाते हुए बस तक पहुंचे। श्री सुरेश चन्द जैन पहाडी वालो ने सभी यात्रियों का फूल माला पहना कर स्वागत किया। सुबह 4 बजे चांदखेड़ी मंदिर परिसर में पहुँच कर विश्राम कर सुबह 7 बजे दर्शन-पूजन कर बजरंगगढ़ (गुना) पहुंचे। अशोक नगर त्रिकाल चौबीसी के दर्शन कर थूबोन जी में रात्रि विश्राम किया। द्वितीय दिवस को चंदेरी खंदारगिरी, कुण्डलपुर में आरती कर कुण्डलपुर में विश्राम किया। तृतीय दिवस कुण्डलपुर की वंदना के बाद दोणागिरी से खजुराहो में प्राचीन शांतिनाथ जैन मंदिर और मतंगेश्वर महादेव मंदिर और विष्णु मंदिर दर्शन के बाद झांसी में रात्रि विश्राम किया।

चतुर्थ एवं अंतिम दिवस को झाँसी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन वंदन कर सोनागिरी जी की वंदना सआनंद पूर्ण कर मुरैना ज्ञानतीर्थ अतिशय क्षेत्र के दर्शन करने बाद रात्रि 8 बजे सिरस जैन मंदिर में सामुहिक आरती कर जयपुर के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में महवा संघ के द्वारा यात्रा संघ के संघपति श्रीमान बाबूलाल जी कैमरी वालों का साफा, शॉल एवं माला पहनाकर स्वागत कर सभी यात्रियों का भी तिलक लगाकर श्रीफल भेंट कर स्वागत किया।

स्वागत की इस घड़ी में संयोजक श्री पारस जैन गहनौली का भी माला एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया।

यात्रा में श्री महेश चन्द जैन (भूतपूर्व सदस्य कार्यकारणी महासभा), श्री राजकुमार जैन (एस.एम.एस. ब्लड बैंक), श्री विनोद जी कंजौली का एवं श्री पारसमल जैन (कार्यकारिणी सदस्य, महासभा) का विशेष योगदान रहा। यात्रा में नेमीचन्द जी (गंगापुर वाले), बनवारीलाल जी एवं रवि जी का मार्गदर्शन भी प्राप्त होता रहा। श्री सुरेशचन्द जैन नदबई वाले, मिथलेश जैन, उषा जैन, विमला जैन, मधु जैन पिंकी का भजनों एवं नृत्य के माध्यम से भक्ति का आनंद भी अनोखा रहा। इस तरह चार दिवसीय यात्रा सआनंद सम्पन्न हुई।

प्रथम पुण्य तिथि पर सादर नमन एवं श्रद्धांजलि

अवतरण :
15.10.1972

अवसान :
25.04.2021

स्व. श्री भवनेश कुमार जी जैन

सुपुत्र श्री हुकुम चन्द जैन एवं श्रीमती देवी जैन (करही वाले)

निवास : 60/70, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर

हम आपके वाक्य (Quality Education with Moral Values) के प्रति वचनबद्ध हैं। आपके सद्व्यवहार, सेवा भावना, कर्तव्य परायणता एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत्-शत् नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

धर्मपत्नी :
श्रीमती शालिनी गुप्ता
चाचा-चाची :
डॉ. जिनेश जैन-कुमुद जैन
जगदीश जैन-राजरानी जैन
भाई-भाभी :
योगेश जैन (RES)-मंजू जैन
भतीजी, भतीजा :
सुरभि, शिल्पी, निखिल जैन
भानजा-बहु :
हिमांशू जैन-पारूल

ससुराल पक्ष :
श्रीमती स्नेहलता गुप्ता
तनुज गुप्ता, अंकित गुप्ता
साली-साढ़ू :
डॉ. पारूल-सुनीत जैन

एवं
समस्त शिक्षण संस्थान परिवार

पुत्र :
श्रीमती दिव्यांश जैन
बुआ-फूफाजी :
सुशीला-चुन्नालाल जैन
उर्मिला-अशोक जैन (आगरा)
मीरा-अजीत जैन (बैर)
बहन-बहनोई :
गीतांजलि-रामनिवास जैन
सुमन-डॉ. अनिल जैन
भानजी-दामाद :
सोनम-मनोज
श्वेता-विवेक
हंसिका (किट्टू)

PIONEER STUDY POINT • BLESSINGS PUBLIC SCHOOL
60/70, Sheopur Road, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री त्रिलोक चन्द जी जैन
(अजमेर वाले)
(स्वर्गवास : 22.03.2011)

स्व. श्रीमती अशर्फी देवी जी जैन
(स्वर्गवास 28.02.2008)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, धर्मपरायणता, सेवा भावना एवं प्रेरणादायक चरित्र सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत-शत नमन करते हुए अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
राजेन्द्र कुमार-ललिता जैन
वीरेन्द्र कुमार-अनूपा जैन
सुशील कुमार-प्रतिभा जैन
हेमन्त कुमार-पुष्पा जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
आर्कि. दीपक-अंजना जैन
वरूण-पूर्णिमा जैन
पायलट नमन-जलमीन जैन

पड़पौत्री :
नव्या जैन
दिशिता जैन

पौत्री-दामाद :
ज्योति-अमित जैन
रश्मि-मनोज जैन
स्वाति-आकाश जैन
वृष्टि-हिम्मत जी
डॉ. निकेता-रितेश जी
मानसी-प्रतीक जी

पुत्री-दामाद :
सरोज जैन-स्व. विजेन्द्र कुमार जैन
राजकुमारी जैन-गणेशराम जैन

दोहिते, दोहिती :
आलोक जैन
अलका जैन
विकास जैन
मीतू जैन

प्रतिष्ठान

सृजन आर्किटेक्ट एण्ड कंस्ट्रक्शन
वल्युअर एण्ड इन्टीरियर डिजाईनर
मांग्यावास, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 9828580724

माँ फूड बैंक
नव्या लाइब्रेरी
मांग्यावास, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 9460136500

निवास : 25/26, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर, मो.: 9928237265, 8949224095

वाचिक अनुशासन के सूत्र

दर्शन के एक विद्यार्थी ने पूछा- हमारे जगत् में सबसे ज्यादा मूल्यवान् क्या है? क्या चेतना का मूल्य सबसे अधिक नहीं है? मैं समझता हूं उसका मूल्य सबसे अधिक है, क्योंकि सारे मूल्य उसी के द्वारा प्रस्थापित होते हैं। चेतना का जगत् है, इसलिए मूल्य हैं सारे। यदि चेतना न हो तो कोई मूल्य हो नहीं सकता।

मैं दो क्षण मौन रहा। उसकी वाक् से सहमत होने में भी मुझे कठिनाई का अनुभव हो रहा था और असहमत होने में भी कठिनाई का अनुभव हो रहा था। कभी-कभी ऐसे प्रश्न सामने आते हैं कि उनको स्वीकार करना भी कठिन होता है और अस्वीकार करना भी कठिन होता है। मैंने कहा- मैं तुम्हारी प्रस्तावना से पूर्णरूपेण सहमत भी नहीं हूं और असहमत भी नहीं हूं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि चेतना बहुत मूल्यवान् है। हम सारे मूल्यों की चर्चा चेतना के आधार पर ही करते हैं। जड़ जगत् में मूल्यों की चर्चा कभी नहीं होती। जानते ही नहीं, मूल्यों की क्या चर्चा करेंगे? मूल्यों का ज्ञान ही नहीं है तो उनकी चर्चा कैसे होगी? अवचेतन जगत् में किसी मूल्य की प्रस्थापना नहीं होती, मूल्यों का कोई सिद्धांत नहीं होता मूल्यों की कोई चर्चा नहीं होती। ये सारे सिद्धांत बनते हैं चेतना के जगत् में। इसलिए चेतना को सर्वोपरि मूल्य दिया जाए, यह तर्क-संगत है। किन्तु सर्वांगीण दृष्टिकोण से देखने पर लगेगा कि यह बात तर्क-संगत होते हुए भी त्रुटिपूर्ण है। चेतना मूक होती है। उसके पास वाणी नहीं होती। चेतना अपने तक सीमित है। उसका विस्तार नहीं होता। चेतना का सारा जगत् छोटा है। उसमें विस्तार नहीं है दुनिया का सारा विस्तार वाणी के माध्यम से हुआ है। यदि वाणी न हो तो हमारी दुनिया सिमट जाए। यदि भाषा न हो, शब्द न हो तो विस्तार की बात ही नहीं हो सकती। दुनिया सिमट जाती है। फिर कोरा व्यक्ति बचेगा, समाज नहीं बनेगा, संबंध नहीं बनेगा। समाज का विस्तार और संबंधों का विस्तार वाणी के माध्यम से होता है। इसलिए मैं मानता हूं कि हमारी दुनिया में सबसे अधिक मूल्यवान् है वाणी। समूची दुनिया वाणी के द्वारा निर्मित है।

कुछेक दार्शनिकों ने यह प्रस्थापना की कि संसार शब्द से उत्पन्न हुआ। प्रारम्भ में शब्द पैदा हुआ और शब्द से सारी सृष्टि का निर्माण हुआ। मुझे लगता है कि यह कथन वास्तविकता पर आधारित है।

सृष्टि का विस्तार वाक् से होता है, वाणी से होता है। यदि वाणी नहीं होती तो एक आदमी किसी दूसरे आदमी के साथ सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाता। कोई माध्यम ही नहीं बनता। न स्मृति होती, न कल्पना होती और न चिन्तन होता। ज्ञान के तीन पहलू हैं- स्मृति, कल्पना और चिन्तन। ये तीनों वाणी के आश्रित हैं। मन और वाणी को अलग करना समझ में नहीं आता। क्या वास्तव में मन और वाणी दो हैं? जैन आचार्यों इस प्रश्न पर बहुत गहराई से विचार किया है। उन्होंने कहा- एक स्थिति में मन और भाषा दो नहीं रहते, एक बन जाते हैं। आज के मनो-वैज्ञानिक भी इसी भाषा में सोचते हैं कि मन और भाषा को सर्वथा पृथक् नहीं किया जा सकता। मन का काम है- स्मृति करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मनन करना। क्या कोई ऐसी स्मृति है जिसमें भाषा साथ न हो? क्या कोई ऐसी कल्पना होती है जिसमें भाषा और शब्द हो? क्या कोई ऐसा चिंतन होता है जिसमें भाषा या शब्द का उपयोग न हो? भाषा से गुप्त कोई स्मृति नहीं हो सकती। भाषा से गुप्त कोई कल्पना नहीं हो सकती। भाषा से गुप्त कोई चिंतन नहीं हो सकता। स्मृति, कल्पना और चिन्तन तीनों के लिए शब्द चाहिए। बिना शब्द के वे लंगड़े हैं, चल ही नहीं सकते। तो फिर मन और वाणी या भाषा या शब्द को अगल करने की सीमा कहां है? मुझे लगता है कि यह बात हमें सीमा का बोध करायेगा कि भाषा को मूक मन कहा जा सकता है और मन को मुखर भाषा कहा जा सकता है। जब मन मुखर होता है, बोलने लगता है, तब मन का नाम भाषा हो जाता है और भाषा जब मूक

बनती है, तब उसका नाम मन हो जाता है। कितना ही बड़ा ज्ञानी हो, अतीन्द्रियद्रष्टा हो, यदि उनके पास भाषा नहीं है तो वह दुनिया के काम का नहीं होता। केवलज्ञानी और अवधिज्ञानी भी भाषा के अभाव में अनुपयोगी बन जाते हैं। केवलज्ञानी भी मूक हो सकता है। वह जानता सब कुछ है पर बता नहीं सकता। वह दुनिया के लिए अनुपयोगी होता है। मुनि के लिए एक विशेषण है- 'तिन्नाणं तारयाणं'-मुनि स्वयं तरता है और दूसरों को तारता है। वह स्वयं अपनी समस्याओं का पार पाता है और दूसरों को भी समस्याओं से पार पहुंचाता है। यह सब भाषा के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है। भाषा के बिना ऐसा नहीं हो सकता। भाषा के अभाव में वह स्वयं तैर सकता है, दूसरों को नहीं तैरा सकता। 'तिन्नाणं तारयाणं' वाली बात भाषा के आधार पर ही सफल होती है।

दुनिया में तीन प्रकार के लोग हैं।

एक बादशाह था। उसको एक नौकर की जरूरत थी। परीक्षण के लिए अनेक लोगों को बुलाया। जब आदमी रखना था तो परीक्षण जरूरी था। क्योंकि आदमी बहुत काम देने वाला होता है तो आदमी बहुत खतरनाक भी होता है। कोई खतरनाक आदमी न आ जाए इसलिए परीक्षा जरूरी थी। उपस्थित लोगों में बादशाह ने तीन व्यक्तियों को चुना। शेष को विदाई दे दी। बादशाह ने तीनों व्यक्तियों को सामने खड़ा कर कहा- बताओ, इत्तफाक से मेरी दाढ़ी और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाए तो तुम क्या करोगे? पहला तत्काल बोल उठा- हुजूर! आपकी दाढ़ी की आग तत्काल बुझा दूंगा। अपनी दाढ़ी की आग की चिन्ता ही नहीं करूंगा। दूसरा बोला- जहांपनाह! पहले मैं अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और फिर आपकी दाढ़ी की चिन्ता करूंगा। तीसरा बोला- हुजूर! एक हाथ से आपकी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा और दूसरे हाथ से अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा।

बादशाह ने तीनों व्यक्तियों के उत्तर सुनकर कहा- 'पहला आदमी अव्यावहारिक है। दुनिया में ऐसा कोई भी आदमी नहीं होता जो कठिन समय आने पर अपनी बात न सोचकर दूसरे की बात सोचता हो। अपनी हित-चिन्ता न कर दूसरे की हित-चिन्ता करता हो। वह व्यक्ति सर्वथा अव्यावहारिक है। जो व्यक्ति अव्यावहारिक बात कहता है, वह हमेशा धोखा देता है। अज्ञानी व्यक्ति सदा अव्यावहारिक बात करता है। वह ऐसी बात करता है कि सामने वाले को लुभा लेता है, किन्तु उसे धोखा देता है।'

दूसरा आदमी स्वार्थी है। स्वार्थी आदमी किसी का भला नहीं करता। वह खुदगरज होता है। वह सदा अपनी ही बात सोचता है, अपना ही भला करता है। दूसरे की बात को वह सोच ही नहीं सकता। वह आदमी भी खतरनाक होता है।'

'तीसरा आदमी व्यावहारिक है। वह व्यवहार की बात करता है, सचाई की बात करता है। वह न अव्यावहारिक है और न स्वार्थी। वह व्यवहार के धरातल पर जीता है।'

बादशाह ने उस तीसरे व्यक्ति को नौकरी दे दी। दोनों को विदा कर दिया।

जो आदमी अपनी भलाई करना जानता है और साथ-साथ दूसरे की भलाई करना भी जानता है वह व्यावहारिक होता है। यह व्यवहार की बात होती है। हमारी दुनिया में यही व्यवहार चलता है।

भाषा भी एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा अपनी भी भलाई हो सकती है और दूसरे की भी भलाई हो सकती है। भाषा में भलाई निष्पादन करने की शक्ति है तो उसमें बुराई करने की शक्ति भी है। दोनों ओर वह समानरूप से चलती है। भाषा में जो क्षमता है, भाषा के द्वारा जो संपादित होता है, वह न मन के द्वारा होता है और न शरीर के द्वारा होता है। इसलिए भाषा का मूल्य सबसे अधिक है।

हमारे जीवन-तंत्र के तीन साधन हैं– मन, वाणी और शरीर। सबसे पहले है मन। यह चेतना को भीतर ले जाता है। उसके बाद है वाणी और फिर है शरीर। यह है जीवन की सीमा। हमारा सारा आचार और विचार इनकी सीमाओं में निर्धारित होता है। फिर चाहे आचार और विचार अच्छा हो या बुरा। कोई बुरा विचार मन में उभरा और मन तक ही सीमित रहा तो व्यवहार में वह अलाभप्रद नहीं बनता। मन में आया कि उस व्यक्ति को दो-चार लात मारूं, चांटे जमाऊं या उसका गला घोट दूं। यह विचार आया, मन तक रहा तो कोई बात नहीं। आया और चला गया, भीतर प्रवेश नहीं हो सका किन्तु जब वही विचार भाषा में आ जाए तो क्या होता है,

सब उसको जानते हैं। आचरण की सीमा आगे बढ़ गई। व्यवहार आगे बढ़ गया। रोष पैदा हो गया, आक्रोश पैदा हो गया और सामने वाले व्यक्ति की भृकुटी तन गई। बात यदि भाषा तक ही सीमित होती है, तो केवल तनाव की स्थिति बनती है। जब वही बात काया में उतर आती है तब स्थिति और गंभीर बन जाती है। हाथ उठ जाता है। चांटे जड़ दिये जाते हैं। लातें मार दी जाती हैं। संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है।

मन की एक सीमा है। वाणी की एक सीमा है। शरीर की एक सीमा है। हमारे सारे आचरण और व्यवहार-इन सीमाओं में चलते हैं। इसीलिए सबसे पहला स्थान मन को दिया गया। कोई बात मन में आए, संयम करो। उसे मन तक ही सीमित रखो। मन में कोई बुरी बात न आए, अच्छी बात है। पर मन में आ जाए तो उसे मन तक रखो। बाहर मत आने दो। यदि यह सीख लिया जाता है तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। जब आदमी इस सीमा से आगे बढ़ता है तो वह बात उसके वश में नहीं रहती, वह दुनिया की बात हो जाती है। जब तक मन की बात मन में रहती है तब तक वह व्यक्तिगत बात बनी रहती है। पर जब मन की बात भाषा में उतर आती है तब वह सामाजिक बन जाती है, वैयक्तिक नहीं रहती। व्यक्ति और समाज की यही सीमा है। जब आचरण मन की सीमा तक होता है, वह वैयक्तिक होता है। वह व्यक्तिगत सीमा है। मन से बाहर जब आचरण और व्यवहार होता है वहां व्यक्ति की सीमा समाप्त हो जाती है। वही का आदि-बिन्दु बन जाता है। समाज का आरम्भ वचन से होता है। वचन की वात शरीर पर चली जाती है तो इसका और अधिक विस्तार हो जाता है। वाणी एक ऐसी शक्ति है जो एक ओर मन का प्रतिनिधित्व करती है तो दूसरी ओर शरीर को उछालती है। आदमी किसी से लड़ता है तो वाणी के द्वारा लड़ता है। आदमी किसी से प्रेम करता है तो वाणी के द्वारा करता है। आदमी किसी को अपना बनाता है तो वाणी के द्वारा ही बनाता है। आदमी किसी को विरोधी बनाता है तो वाणी के द्वारा ही बनाता है। वाणी की बहुत बड़ी शक्ति है। मुंह से एक बात निकलती है और सामने वाले व्यक्ति को जो चाहे सो बना देती है।

अंग्रेज पानी में डूब रहा था। एक भारतीय ने देखा। उसके मन में करुणा जागी। वह तैरना जानता था। वह पानी में कूदा और अंग्रेज को बचा लिया। तट पर आकर अंग्रेज ने कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हुए कहा थैक्यू। बचाने वाला अनपढ़ था। वह समझा नहीं। उसने समझा- कह रहा है फेंक दो। उसने अंग्रेज को उठाकर पुनः पानी में फेंक दिया। बोला- मैंने ही निकाला और मुझे ही कह रहा है फेंक दो। यह सारा वाणी का चमत्कार था, शब्द का चमत्कार था और कुछ नहीं। निकालने वाला भी वही था, फेंकने वाला भी वही था। करुणा गायब हो गई उसके मन से। मन में आक्रोश जाग गया। करुणा का स्थान क्रूरता ने ले लिया। अंग्रेज पानी में तड़पता रहा। वह तट पर खड़ा उसे तड़पते देखता रहा। इस दुनिया में वाणी के द्वारा क्या-क्या नहीं होता। सारा इतिहास वाणी पर आधारित है। वह ज्ञान वाणी में निबद्ध होकर पुस्तकों में प्राप्त है। जो कुछ मिलता है, वह सारा वाणी के द्वारा मिलता है।

वाणी के साथ तीन शक्तियां काम करती हैं : वाणी की अपनी शक्ति। भावना की शक्ति। वाणी के द्वारा पैदा होने वाली तरंग की शक्ति।

ये तीनों शक्तियां हैं। सबसे पृष्ठभूमि में रहती है भावना की शक्ति। वाणी के साथ भावना का बहुत बड़ा संबंध है। जिस भावना से जो वाणी निकलती है वैसा ही कार्य होने लग जाता है और वैसी ही तरंग पैदा होने लग जाती है। भावना के बिना वाणी को समझा ही नहीं जा सकता। आदमी अपनी भावना से बात को पकड़ता है और कहने वाले की भावना से भी बात समझ में आ जाती है। भावना है सूक्ष्म वाणी। भावना सबसे अधिक काम करती है। जितने मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हैं, सब भावनात्मक वाणी के द्वारा होते हैं। भावना शब्दों के माध्यम से आती है। भावना शब्दातीत नहीं होती। मन में उसका एक आकार बनता है। वह शब्द का ही आकार होता है।

एक बुढ़िया सिर पर गठरी लिए जा रही थी। एक आदमी घोड़े पर चढ़कर जा रहा था। उसने बुढ़िया को देखा। मन में दया जागी। उसने कहा- मां! मैं तुम्हारे गांव ही जा रहा हूं। लाओ, गठरी घोड़े पर रख दो। आगे मैं ठहरूंगा, वहां ले लेना। बुढ़िया ने गठरी दे दी कुछ दूर जाकर घुड़सवार रुका।

बुढ़िया भी पहुंच गई। पानी पीया। बुढ़िया बोली- भाई! अब तुम जाओ, घोड़ा भी थक गया है। गठरी दे दो। बड़ी कृपा की, इतनी दूर गठरी ले आए। घुड़सवार ने गठरी बुढ़िया को दे दी। घुड़सवार आगे बढ़ गया। उसके मन में आया आज मैं भूल कर बैठा। बुढ़िया की गठरी भारी-भारी थी। उसमें कुछ माल अवश्य था। यदि मैं उस गठरी को लेकर आगे बढ़ जाता तो बुढ़िया क्या कर पाती? मैंने बड़ी मूर्खता की। आया हुआ माल व्यर्थ ही लौटा दिया। वह वहीं रुक गया। इतने में ही बुढ़िया भी धीरे-धीरे वहां पहुंच गई। घुड़सवार बोला- मां! थक गई होगी। लाओ गठरी दो। आगे रुक जाऊंगा। बुढ़िया बोली- नहीं, अब गठरी नहीं दूंगी। जो तुम्हें कह गया, वह मुझे भी कह गया। बुढ़िया जान गई कि अब घुड़सवार के मन में धोखा देने की भावना आ गई।

भावना की शक्ति प्रसरणशील होती है। भावना हमारी सूक्ष्म भाषा है। यह सूक्ष्म वाणी है। एक व्यक्ति के मन में जो भाव या भाषा बनती है, सामने वाले व्यक्ति के मन में उसकी प्रतिक्रिया भाषा में बन जाती है। यह ऐसा जाना पहचाना मनोवैज्ञानिक सत्य है जिसे कोई उलट नहीं सकता। वह अन्यथा नहीं हो सकता। एक व्यक्ति किसी के बारे में अच्छे विचार करता है, अच्छी भावना करता है, सामने वाले के मन में अपने आप अच्छे विचार आ जाते हैं, अच्छी भावना आ जाती है। बुरा विचार करता है तो सामने वाले के मन में उसके प्रति अप्रियता की भावना जाने-अनजाने पैदा हो जाती है।

वाणी की एक शक्ति है भावना और दूसरी शक्ति है उच्चारण। उच्चारण के आधार पर ही समूचे मंत्र-शास्त्र का विकास हुआ है। और उच्चारण के आधार पर ही मंत्र-शक्ति का विकास होता है। तरंग का सिद्धांत भी इसके साथ जुड़ता है। आज वाणी पर आधुनिक खोजें हुई हैं, मंत्रशास्त्रीय खोजें हुई हैं। इन खोजों में तीनों शक्तियों की बात निर्णीत हुई हैं। तीनों बातें जुड़ी हुई मिलती हैं। पहली बात है भावना। दूसरी बात है उच्चारण और तीसरी बात है उच्चारण के द्वारा उत्पन्न वाणी की शक्ति। उच्चारण के साथ-साथ तरंग पैदा होती है। एक शब्द का उच्चारण होता है और अल्फा-तरंगें पैदा हो जाती हैं। एक शब्द का उच्चारण होता है और थेटा-तरंगें पैदा हो जाती हैं, बेटा तरंगें पैदा हो जाती हैं। इन तरंगों के आधार पर मंत्रों की कसौटी की जाती है। 'ओम्' का उच्चारण होता है। अल्फा-तरंगें पैदा होती हैं और मस्तिष्क रिलेक्स हो जाता है, शिथिल हो जाता है। जैसे-जैसे मस्तिष्क की शिथिलता बढ़ती है, अल्फा-तरंगें पैदा होती चली जाती हैं। शिथिलन के लिए यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। जितने भी बीज-मंत्र हैं उनसे भिन्न-भिन्न तरंगें उत्पन्न होती हैं और वे मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। बीजाक्षर हैं- अ, सि, आ, उ, सा अहँ, ओम् , ह्रीं, श्री, क्लीं। ये सारे बीज मंत्र हैं। इनसे उत्पन्न तरंगें ग्रन्थि संस्थान को प्रभावित करती हैं, अन्तःस्रावी ग्रंथियों के स्राव को संतुलित करती हैं। ग्रंथियों का स्राव 'ह्र' के उच्चारण से संतुलित हो जाता है। मस्तिष्क अस्त-व्यस्त होता है। एक शब्द का जप शुरू होता है और मस्तिष्क व्यवस्थित हो जाता है।

ध्यान के साथ-साथ जप का विशेष प्रयोग चल सकता है। उससे शांति की तरंगें उत्पन्न होती हैं, एकाग्रता का विकास होता है। कुछेक अक्षरों का जाप ठंडक पैदा करता है और कुछेक अक्षरों का जाप गर्मी पैदा करता है। एक हजार बार 'रं' का उच्चारण करें। तापमान बढ़ जाएगा। 'रं'' बीजाक्षर है। उसके परमाणु ऐसी तरंगें पैदा करते हैं जो तापकारक होती हैं। इसी प्रकार ठंडा पैदा करने वाले बीजाक्षर भी हैं। आकर्षक और वशीकरण करने वाले बीजाक्षर हैं। इनसे भिन्न-भिन्न प्रकार की तरंगें उत्पन्न होती हैं और अपना प्रभाव डालती हैं। तरंगों का प्रभाव आज छुपा हुआ नहीं है। आज वह प्रमाणित हो चुका है। हमारी सारी दुनिया तरंगों की दुनिया है। यहां जो कुछ भी हो रहा है, वह सारा तरंगों के द्वारा हो रहा है। चिन्तन की तरंग, भाषा की तरंग, शरीर से निरन्तर निकलने वाली तरंग आदि-आदि अनेक प्रकार की तरंगें हैं। यह दुनिया नाना प्रकार की ऊर्मियों और तरंगों से आकुल-व्याकुल है। सब कुछ तरंगमय है। तरंगातीत कुछ भी नहीं है। तरंगातीत वही हो सकता है जो भाषातीत हो जाता है, भाषा से परे चला जाता है। जो व्यक्ति भाषातीत, विकल्पातीत और चिन्तनातीत नहीं होता वह कभी तरंगातीत नहीं हो सकता।

ध्यान का प्रयोग तरंगातीत जगत् का अनुभव करने के लिए करते हैं। किन्तु तरंगों के जगत् से परे जाना,

गुरुत्वाकर्षण को तोड़कर अन्तरिक्ष में जाना कोई साधारण बात नहीं है, बहुत ही कठिन बात है। मनुष्य पुरुषार्थी है। उसमें असीम मनोबल है। उसमें असीम संकल्प है। उसकी चेतना प्रबल है। उसने गुरुत्वाकर्षण को भी बेध डाला है। वह गुरुत्वाकर्षण की सीमा को पार कर अन्तरिक्ष यात्रा करने में पूर्ण सफल हुआ है। जब कोई व्यक्ति वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर अन्तरिक्ष की यात्रा कर सकता है तो ध्यान के द्वारा तरंगातीत चेतना का अनुभव क्यों नहीं कर सकता? ऐसा सम्भव है। यह किया जा सकता है।

प्रश्न है वाणी की शक्ति का विकास कैसे हो? जब तक वाणी की अशुद्धि नहीं मिटती, उसके मल-दोष समाप्त नहीं होते, तब तक वाणी की शुद्धि नहीं हो सकती। उसकी अशुद्धि को मिटाने का एक उपाय है- 'प्रलम्बनादाभ्यासाद् वाक्शुद्धिः'-प्रलंब नाद के अभ्यास से वाक्शुद्धि होती है। ध्वनि प्रलम्ब है। मन के साथ, भावना के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रलम्बनाद का अभ्यास महत्त्वपूर्ण होता है। यह उच्चारण का एक प्रकार है। उच्चारण अनेक प्रकार के होते हैं- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, ह्रस्व, दीर्घ प्लुत आदि। मंत्रशास्त्र में ह्रस्वोच्चारण का एक प्रकार का लाभ होता है, दीर्घोच्चारण का दूसरे प्रकार का लाभ होता है और प्लुत उच्चारण का भिन्न प्रकार का लाभ होता है। उच्चारण जितना लम्बा होता है, ऊर्जा उसी के अनुपात में निर्मित होती है और मन के साथ उसका संबंध स्थापित होता है। अहं और ओम् का लम्बा उच्चारण होता है। सामवेद में अनेक प्रकार की उच्चारण-पद्धतियों का महत्त्वपूर्ण उल्लेख है। उच्चारण के आधार पर एक-एक मंत्र की हजार-हजार शाखाएं हो जाती हैं।

जप बहुत सारे लोग जप करते हैं। वे कहते हैं, इतने वर्ष हो गए, जप से कुछ नहीं हुआ। कैसे हो? निष्पत्ति कैसे मिले? जब तक मंत्र-शब्द के उच्चारण का रहस्य हाथ में नहीं आता तब तक मंत्र अर्थवान नहीं होता, शक्तिशाली नहीं बनता। गुरु के बिना उच्चारण-भेद से होने वाले परिवर्तनों को नहीं जानता, वह दूसरों को क्या बता सकता है? एक ही शब्द उच्चारण भेद से पचासों परिणाम ला देता है। ओम् के अनेक प्रकार के उच्चारण हैं। एक प्रकार का उच्चारण एक काम करता है और उसी शब्द का दूसरे प्रकार का उच्चारण दूसरा काम करता है। उसकी प्रतिक्रिया बदल जाएगी। परिणाम बदल जाएगा।

भाषा के उच्चारण का बहुत महत्त्व है। मंत्र शास्त्र में शब्द के उच्चारण की प्राथमिकता दी गयी है। लाभदायी मंत्र भी गलत उच्चारण के कारण अलाभप्रद बन जाता है।

प्राचीन जैन साहित्य में उच्चारण के अनेक दोष बतलाए गए हैं- जं वाइद्धं वच्चामेलियं हीणक्खरियं अच्चक्खरियं पयहीणं जोगहीणं घोसहीणं.....। मंत्र का उच्चारण करते समय मंत्राक्षरों को कम भी न बोले, अधिक भी न बोले, एक दूसरे में मिलाकर न बोलें। जहां विराम लेना हो वहां विराम लें। एक पद को दूसरे में न मिलाएं। शब्दों के योग का ध्यान रखें। घोष का पूरा विचार रखें। उचित शब्द पर उचित विराम न लेने के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। सारे अर्थ का परिवर्तन हो जाता है। जब उच्चारण के सारे दोष मिट जाते हैं तब वाणी भी शुद्ध होती है। शब्दानुशासन का कथन है- जो शब्द का शुद्ध उच्चारण करता है वह स्वर्ग में चला जाता है, शब्द उसके लिए कामधेनु बन जाता है।

दग्धाक्षर की बात बहुत प्रचलित है। यह भी उच्चारण या रचना पद्धति का ही एक दोष है। इससे सारी भावना ही बदल जाती है। जीवन का वृत्त बदल जाता है। नागौर शहर में एक सेवक रहता था। वह कविता लिखता था। एक रचना के अन्त में उसने अपने स्थान का नाम लिखा। संयोगवश लिखते समय उसने 'नागो रमे' ऐसा लिख दिया। उसे लिखना- 'नागौर में' और लिख दिया 'नागो रमे'। ऐसा योग बना कि वह उस रचना के बाद कुछ ही महीनों में पागल हो गया और नंगा घूमने लगा ('नागो रमे' का यही अर्थ है)।

वाणी और शब्दों का संयोजन और उच्चारण हमारी भावना को प्रभावित करता है। शब्दों की शक्ति, भावना की शक्ति और उच्चारण की शक्ति इन तीनों को समझना बहुत आवश्यक है। यही वाणी-शुद्धि की प्रक्रिया है। प्रलम्ब नाद इसी का एक संकेत है।

उच्चारण का, वाक्शुद्धि का दूसरा उपाय है- सत्य का आलंबन। विवेक कर लिया, तरंगों को भी समझ लिया,

किन्तु उसके पीछे भावना का जो बल है वह यदि असत् है, असत्य है तो सब कुछ बिगड़ जाएगा। यदि हम आज की समस्याओं का विश्लेषण करें तो प्रतीत होगा कि उनके मूल में असत्य का बहुत बड़ा हाथ है। इसलिए सारी समस्याएं जटिल होती जा रही हैं। आप सोचेंगे, असत्य के बिना समाज का व्यवहार ही नहीं चल सकता। सारी राजनीति, कूटनीति के आधार पर चलती है। कूटनीति का आधार है- असत्य। समाज का छोटे से छोटा व्यवहार और बड़े से बड़ा व्यवहार असत्य के आधार पर चलता है। एक आदमी झूठ बोलता है, बच जाता है, सत्य बोलता है, मारा जाता है।

जज ने अपराधी से कहा- 'तुम न्यायालय में खड़े हो। सच-सच कहना, झूठ मत कहना। अच्छा बतलाओ, झूठ बोलने से कहां जाओगे और सच बोलने से कहां जाओगे?'

जज साहब! जानता हूं। झूठ बोलने से नरक में जाऊंगा और सच बोलने से जेल में जाऊंगा।

आज प्रत्येक आदमी के मन में यह आस्था बैठ गई है कि समाज में सच बोलने का अर्थ है- आपदाओं को निमन्त्रण देना, कठिनाइयों में फंसना। जो झूठ बोलने में माहिर होता है वह बड़े से बड़ा अपराध करके भी बच जाता है। जो व्यक्ति वाक्-चतुर होता है, झूठ को छिपाना जानता है, वह सफल हो जाता है। जो सच बोलता है वह बुद्ध होता है, पागल होता है, मूर्ख होता है - यह आज की आस्था है। इसी आस्था के कारण सारा व्यवहार गड़बड़ा गया है। हम चाहते हैं कि अन्याय मिटे, अनाचार मिटे, अत्याचार मिटे, ईमानदारी और प्रामाणिकता आये, सत्य का विकास हो। पर यह कैसे हो? मूल को ही काटा जा रहा है। मूल में ही भूल है, फिर यह सब कैसे हो?

भगवान् महावीर ने सत्य का सुन्दर दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा- सत्य वहीं है जहां काया की सरलता है, भावों की सरलता है, वाणी की सरलता है और अविसंवादिता है। अविसंवादिता का अर्थ है- विसंगतियों से परे हो जाना। एक दिन एक बात कहना और दूसरे दिन दूसरी बात कहना-यह विसंवाद है। सत्य वह होता है जो अविसंवादी होता है। दस वर्ष पूर्व जो बात कही वही बात पचास वर्ष बाद कहेगा। वाणी में विसंवादिता नहीं होगी। किंतु आज भाव भी टेढ़ा है, वचन भी टेढ़ा है और जीवन के पग-पग पर विसंवादिता है। इस स्थिति में वाणी की शक्ति कैसे प्राप्त हो? वाक्-शुद्धि कैसे हो? जिस व्यक्ति की वाक्-शुद्धि हो जाती है, उसके मुंह से निकली हुई बात को होना ही पड़ता है। वह कथन अन्यथा नहीं होता। वचनसिद्धि का सबसे बड़ा साधन है- सत्य। जो सत्यवादी होता है उसके कथन को कोई बदल नहीं सकता। उसके कथन को कोई अन्यथा नहीं कर सकता। उसकी वाणी की तरंगों में, परमाणुओं में इतनी शक्ति आ जाती है कि प्राकृतिक घटना को वैसे ही घटना पड़ता है। एक व्यक्ति में सत्य का, ब्रह्मचर्य का इतना बल होता है कि प्रकृति भी उससे प्रभावित होती है- बादल होते हैं तो बिखर जाते हैं और नहीं हो तो बन जाते हैं। ऋषिराय साधक थे। वे जब भी पदविहार करते आकाश में बादल मंडराने लग जाते। आतप मंद हो जाता। यह होता है। और भी न जाने क्या-क्या घटित हो जाता है ! सत्य की शक्ति असीम है। परन्तु आज बचपन से ही यह सीख दिया जाता है कि सच बोलोगे तो मारे जाओगे, झूठ बोलोगे तो बच जाओगे। जब जीवन को यह मंत्र मिलता है तब सच को प्रतिष्ठित करने का प्रश्न ही नहीं उठता। बेचारा सत्य कहां, कैसे प्रतिष्ठित हो?

वाणी-शुद्धि का दूसरा उपाय है– सत्यनिष्ठा। जिन लोगों ने सत्य की निष्ठा बनाए रखी, वे विलम्ब से भले ही हो, आगे बढ़े हैं। यदि सत्य के प्रति अटूट निष्ठा होती है तो उसका अच्छा परिणाम अवश्य आता है। प्रश्न है मूल निष्ठा का। वह बनती ही नहीं, बनने से पहले ही मर जाती है। यदि वास्तव में सत्य का प्रयोग हो तो वाणी में भी अपार शक्ति आ जाती है। इससे वचनसिद्धि होती है।

काया की शुद्धि जरूरी है। मन की शुद्धि जरूरी है। काया और मन दोनों के बीच में बैठी है हमारी सरस्वती - हमारी वाक् देवी। वाक्-शुद्धि नहीं होती तब तक काया भी टेढ़ी बनी रहती है। वह अशुद्ध बन जाती है। मन भी अशुद्ध बन जाता है। इसलिए वाक् देवी की, सरस्वती की आराधना साधक के लिए बहुत जरूरी है।

-आचार्य महाप्रज्ञ

'मैं कुछ होना चाहता हूँ' से साभर

शाखा ग्वालियर

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा शाखा ग्वालियर का होली मिलन समारोह दिनांक 20 मार्च 2022 रविवार को होटल शाह इम्पीरियल नौगज़ा रोड पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में भगवान महावीर के चित्र का अनावरण श्री ओमप्रकाश जैन (कोयले वाले) एवं दीप प्रज्ज्वलन श्री पवन जैन (रवि ट्रेडर्स) द्वारा किया गया। तत्पश्चात समाज की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण की सुंदर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में प्रमोद जैन रसीला एवं महेंद्र जैन LIC के होली गीतों ने जबरदस्त समां बाँधा तथा हास्य कवि देवेंद्र नटखट ने सभी को खूब हँसाया।

महिला मंडल द्वारा नारी सशक्तिकरण पर 'कोमल है, कमजोर नहीं तू' गीत की मन को आह्लादित करने वाली प्रस्तुति दी गयी तथा महिला मंडल की सहसांस्कृतिक सचिव श्रीमती सुनीता जैन मामा का बाज़ार द्वारा कपल गेम्स तथा अन्य कई रोचक गेम्स खिलवाये गए।

फूलों की होली के साथ मिलन समारोह में सभी ने ठंडाई चाय कोल्ड ड्रिंक्स तथा स्नेक्स का पूरे समय आनन्द लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पल्लीवाल जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.सी. जैन जयपुर (रिटायर्ड आई.ए.एस) थे। साथ ही महासभा के महामंत्री श्रीमान राजीव रतन जैन इंदौर, उपाध्यक्ष राजकुमार जैन मोहना, प्रांतीय महिला प्रतिनिधि सुषमा जैन (कोचिंग) राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य विवेक जैन ग्वालियर तथा सकल जैन महापंचायत ग्वालियर के अध्यक्ष श्री पारस जैन पी डी संस, श्रीमान निर्मल जैन मार्सन्स भी विशिष्ट अतिथियों के रुप मे उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का चंदन तिलक तथा माला द्वारा सम्मान करने के उपरांत शाखा ग्वालियर के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी जैन (बैंक वाले) द्वारा स्वागत भाषण द्वारा सभी का स्वागत किया गया।

बालिकाओं द्वारा सम्मान में स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सम्पूर्ण संचालन शाखा मंत्री गौरव जैन तथा राजकुमार जैन कोचिंग (पूर्व मंत्री) द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती रत्नप्रभा जैन तथा सचिव मीतू जैन की टीम का भी पूरा सहयोग मिला। अंत में सभी ने सुरुचि भोज का आनंद लिया। होली के गीतों पर डांस किया। सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया तथा मंत्री गौरव जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कपल गेम के विजेता– 1. राजकुमार जैन सुषमा जैन (कोचिंग), 2. अतुल जैन निशा जैन। ***बच्चों के गेम्स के विजेता–*** निहित जैन। ***मंगलाचरण की प्रस्तुति–*** न्यासा जैन, अतिशा जैन। ***स्वागत नृत्य–*** आर्ची जैन, राशि जैन, करिश्मा जैन, गुनगुन जैन। ***नारी शक्ति पर परफॉर्मेंस–*** सुषमा जैन (कोचिंग), सुनीता जैन (मामा का बाज़ार), आरती जैन, अलका जैन, निर्मल जैन, शशि यतीन्द्र जैन।

****

महिला मंडल जयपुर

श्री पल्लीवाल जैन महिला मंडल जयपुर द्वारा फागोत्सव कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास के साथ दिनांक 13 मार्च रविवार को पल्लीवाल भवन पर मनाया गया। फागोत्सव मनाने का उद्देश्य सभी अपने भेदभाव, रागद्वेष को भुलाकर समता भाव अपनाकर अपने जीवन को होली के रंगों की तरह रंगीन और महकता हुआ बनाए जिसमें खुशियां ही खुशियां हो।

कार्यक्रम की शुरुआत णमोकार मंत्र एवं चौबीसी गाकर की गई। इसके पश्चात सभी ने होली के भजन गाये व नृत्य करके खूब आनंद लिया, हाऊजी गेम्स भी खिलाया गया। विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। फागोत्सव में अध्यक्ष ममता जैन, मंत्री रमा जैन, अर्थमंत्री कल्पना जैन, सांस्कृतिक मंत्री मनीषा जैन, सहमंत्री मधु जैन एवं आशा जैन, सविता जैन, उमंग जैन आरती जैन, मोनिका जैन, बबली जैन कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे।

कहीं गलती हमारी तो नहीं

पिछले कुछ दिनों से सम्पूर्ण जैन समाज मे तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी पर होने वाली अनैतिक चीजों तथा हमारे हाथों से छूटते पवित्र तीर्थ की चर्चा हो रही है। कई प्रयत्न भी हमारे देश के जैन समाज द्वारा किए भी जा रहे है एवं युवा सोच भी उसके लिए आगे आ रही है। मगर कहीं न कहीं ये बात सोचने की है कि कहीं ये हमारी गलती तो नहीं।

यूँ तो एक छोटी-सी पंक्ति है मगर गलती हमारी ही तो है हमने अपने तीर्थ क्षेत्र या कहूँ अतिशय क्षेत्रों को प्रभु भक्ति और पवित्र ना मान कर उन्हें पिकनिक मनाने की जगह मान लिया है। कहीं भी जाओ तो लोग दर्शन के लिए कम मगर घूमने रुकने और मनोरंजन के लिए जाने लगे हैं। हम सभी ही तो वहाँ पर चिप्स कुरकुरे खाते हैं और पिकनिक मना कर लौट आते हैं। वहाँ पर दुकानों का लगना और समान का बिकना कहीं हमारी गलती तो नही?

हम ही तो गलती नहीं कर रहे, हमारे आने वाली नई पीढ़ी को जैन समाज के अतिशय क्षेत्रों के बारे में किसी पूजन या किसी भगवान के नाम से थोड़े ना बताते हैं, उन्हें तो कहा घूमने गये या वहाँ कौनसा खेल खेला कह कर याद दिलाया जाता है। हमारे बच्चों को 24 तीर्थंकर के नाम भी महज रटे हुए हैं, उन्हें क्या पता ये कौन थे और क्यूं हम इनकी पूजा करते हैं। हमारा और हमारे परिवार का अपने धर्म से ही दूर हो जाना, कहीं हमारी गलती तो नहीं?

आप सभी भी मेरी तरह देख रहे होंगे, हम जब भी किसी अजैन मंदिर में जाते हैं, अब तो हमारे समाज के लोग मस्जिद में भी जाने लगे हैं, तो हम उस भक्ति भाव से ही जाते हैं जिससे हम अपने मंदिरों मे भी ना जाते होंगे। मगर वही अजैन जब हमारे मंदिरों में आते हैं तो भक्ति भाव या दर्शनीय स्थलों से भी बुरा हाल करते हैं, लेकिन हम कुछ नहीं कहते ना कर सकते हैं क्योंकि हम भी तो वहाँ घूमने ही तो जाते हैं।

प्राचीन मंदिरों जिन्हें राजा महाराजा भी मानते थे, आज हमारा वहाँ जाना तो दूर वहाँ कोई पुजारी या प्रक्षाल के लिए भी नहीं आता होगा, मगर नए मंदिर जहाँ पूरी व्यवस्था है रात्री में भी खाद्य पदार्थ आसानी से मिल जाए वहां जरुर जाएंगे। अभी पिछले कुछ दिनों मैं एक जैन अतिशय क्षेत्र गया तो वहाँ मिलने वालों यात्रियों से पता लगा कि वे मूल मंदिर जो प्राचीन है वहाँ तो गए ही नहीं, महाराज श्री द्वारा निर्मित नए मंदिर में ही ठहरे और वही कई कई मुद्रा लुटा कर बोली ले रहे हैं। इस अज्ञानता में भी कहीं, हमारी गलती तो नहीं?

सच कहूँ तो गलती हम सब की है, जो प्राचीन मंदिर हैं, जिन्हें कोई पूछ भी नहीं रहा या जहाँ कोई यात्री पहुंच भी नहीं रहा है वहाँ कुछ नहीं करते, मगर नए बड़े-बड़े मंदिर बना रहे हैं। मैं ये नहीं कह रहा है कि वे गलत हैं, मगर पुराने तीर्थ अतिशय क्षेत्रों के नव निर्माण एवं पुनर्निर्माण कार्य के लिए हम सब को साथ मिल कर कदम उठाना चाहिए। मेरा अनुरोध है कि सम्पूर्ण जैन समाज एक होकर हमारे जैन तीर्थ क्षेत्रों के विकास और उन्नति में सहयोग दे। समाज के युवाओं से मेरा अनुरोध है कृपया आगे आऐं और जैन धर्म को जाने। कहीं इससे दूर हो जाना हमारी गलती तो नहीं?

अंत में हमारे जैन समाज की एकता अखण्डता और उन्नति की प्रार्थना करता हूं और मेरी किसी बात से किसी का दिल दुखा हो तो हाथ जोड़ कर क्षमा मांगता हूं।

-कार्तिक जैन (The_जैन)

नौगांवा, अलवर

शोक संवेदना

श्रीमती गुलाब देवी जी जैन धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री कपूर चंद जी जैन (महतोली वाले) अहमदाबाद का देवलोक गमन दिनांक 16 मार्च 2022 को हो गया है। आप सरल स्वभावी, धार्मिक, मधुभाषी, मिलनसार महिला थीं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा दिवंगत आत्मा की शांति के लिए वीर प्रभु से प्रार्थना करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री ओमप्रकाश जी जैन

(पूर्व डायरेक्टर जनरल आर.डी.एस.ओ. भारतीय रेलवे)

(जन्म : 04.07.1934 - स्वर्गवास : 23.02.2022)

हम सभी परिवार जन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।
आपका सद्व्यवहार, सेवा भावना एवं प्रेरणादायक चरित्र हमारा सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।

श्रद्धावनत

पुत्री-दामाद :

अरुणा जैन

अनुराधा जैन-श्टेफान आडम

पौत्र :

तामीनो

भाई-भाभी :

डॉ. जयप्रकाश जैन

श्रीमती इन्द्रा जैन

इं. गोपाल प्रकाश जैन-श्रीमती उमा जैन

श्रीमती नलिनी जैन

सत्यप्रकाश जैन-श्रीमती सुनीता जैन

बहिन-बहनोई :

श्रीमती गायत्री जैन

श्रीमती मनोरमा जैन

श्रीमती बीना पालीवाल

श्रीमती आशा-श्री विनोद जैन

श्रीमती प्रभा-श्री नरेश जैन

मथुरा, मो.नं. 9997570006

द्वितीय पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

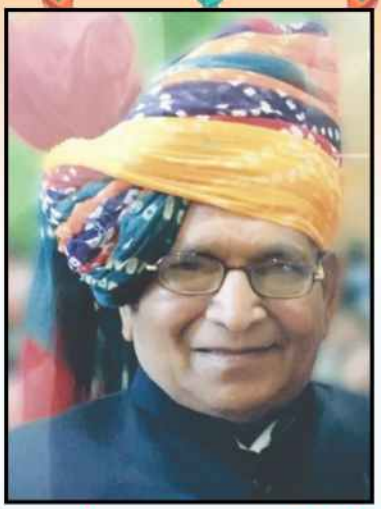

जन्म दिनांक
01 मार्च 1939

देवलोक गमन
21 मार्च 2020

स्व. श्री दयाचन्द्र जी जैन

Retd. B.D.O.

(मूल निवासी खोह-अलवर)

हम सब परिजन आपके प्रेरणादायक जीवन एवं आदर्शों को हृदयस्थ रखते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रृद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
चन्द्र प्रकाश जैन-रजनी जैन
(Ex. En. PWD)
मनीष जैन-आरती जैन
(AEN MCD Delhi)

पौत्री, पौत्र :
रिया, तन्वी,
रोनित, तन्मय

पड़ दोहिती, दोहिते :
अदिश्री, अव्यांश

पुत्री-दामाद :
मन्जू-देवेन्द्र जैन
अर्चना-दिनेश जैन
रेणु-अनिल जैन
निधि-विवेक जैन

दोहिते-दोहिति :
नितिश-दिपाशा
डॉ. निमिषा-डॉ. आधार
अंशुल, समीक्षा, अनुव्रत,
अविजीत, सम्यक

भ्राता :
राजकपूर जैन
विमलचन्द जैन

भतीजे :
धर्मचन्द जैन
राजेन्द्र प्रसाद जैन
सत्यप्रकाश जैन
पंकज कपूर जैन
विजय प्रकाश जैन
विपुल जैन

निवास :
555-बी, स्कीम नं. 2, अलवर
72/29 ए, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
ए-303, आदित्य गार्डन सिटी, वसुन्धरा, गाजियाबाद
फोन : 9414277153, 9717787673

S. R. ENTERPRISES

TRANSASIA

Roche

TOSOH

BIOMÉRIEUX

Ortho-Clinical Diagnostics
a Johnson & Johnson company

Abbott

BIO-RAD

SD BIOSENSOR,INC.

Stago
Diagnostics is in our blood.

B-18&19, Jai Jawan Colony Scheme No. 1st, Tonk Road, Jaipur-302018 (Rajasthan)
(M) +91-9829012628, +91-9414076265 E-mail : srindiaentp@yahoo.com

छोटू उस्ताद

जिस दीये की लौ ईश्वर की कृपा के साये में सुरक्षित हो, उसे कौन बुझा सकता है?

'छोटू उस्ताद' न तो किसी दाँव-पेच सिखाने वाले पहलवान का नाम है, न ही किसी शहर-मौहल्ले के ऐसे शातिर गुरु का, जिसके कई शागिर्द हो। यह नाम तो मैंने ही प्यार से उसका रख दिया था। उसका असली नाम तो 'आनन्द' था, पर उसके छोटे कद एवं गठे शरीर को देखकर मैंने ही उसका नया नामकरण छोटू उस्ताद कर दिया था। उसके रूप, गुण के अनुरूप यह नाम उस पर फबता भी था।

गत दो वर्षों से रोज सुबह सब्जी लाने की ड्यूटी मेरी ही थी। दो वर्ष पहले, दो-चार रोज उच्च रक्तचाप क्या हो गया, डॉक्टर ने सीधी हिदायत दे दी, ''उपाध्याय साहब, कल से ही दो-तीन किलोमीटर 'मोर्निंग वॉक' चालू कर दीजिए वरना और कई बीमारियाँ बिन बुलाये चली आएंगी। बस यह समझ लीजिए उच्च रक्तचाप, ट्रेफिक सिग्नल की हरी और लाल दत्ती के बीच की पीली बत्ती है। अगर चालीस के पार चैन से जीना है तो घी तेल बंद, एवं मोर्निंग वॉक शुरू।'' डॉक्टर तो कहकर चला गया पर घबराहट विरासत में छोड़ गया। कई हृदय रोगियों की दुर्दशा मैंने देखी थी। रोज सुबह ऑफिस जाते वक्त कई बार, मोर्निंग वॉक से लौटते ऐसे लोगों के दर्शन होते थे। दार्शनिक आँखें, सर पर टोपी, हाथ में छड़ी एवं मुख पर कृत्रिम मुस्कराहट स्वयं उनकी दास्तां बयां करती। सूर्योदय के समय भी उनके चेहरे पर सूर्यास्त नजर आता था। फिर दिन में तीन-तीन बार नियम से टेब्लेट्स लो, हर सप्ताह डॉक्टर को चैक-अप करवाओ। यही नहीं जेब में हर समय एक जीवन रक्षक गोली 'आईसोरबाईब' रखो, चाहे आप बाथरूम में ही क्यूं न हो। अपने लिए भी बोझ और घर वालों के लिए भी। बार-बार घर वालों को हिदायत देना, 'देखो! मैं मर जाऊँ तो गुड़िया की शादी अच्छी जगह करना, गुड्डू का ध्यान रखना, बेटे-बहू को प्रेम से रखना। मेरी तस्वीर यहां दीवार पर लगाना, रोज साफ करना, ऊपर चंदन की माला पहनाना, आदि-आदि।' कई रोगियों को तो मैंने 'शोक-सन्देश' तक तैयार करते देखा था, साथ में खिंची हुई दो पासपोर्ट साईज फोटो भी रखते थे। पता नहीं बेटे-बहू को समय पर क्या जंचे, बिना फोटो ही शोक-सन्देश दे दें, मरने के बाद बाप थोड़े ही देखने आता है।

कल्पना ने यमदूत रच डाले। लगा अपने दूतों के साथ भाले-बरछी लिये, भैंसे पर विराजमान 'यम', मेरे दुर्भाग्य की गदा हाथ में लिए द्वार पर ही खड़ा हो। श्रीमतीजी ने और मोर्चा सम्हाला, 'मैं रोज कहती थी, खाने पीने का ध्यान रखा करो, वर्जिश किया करो, पर किसे परवाह है। घर की मुर्गी दाल दराबर। अब तो मुझे ही खबर लेनी होगी।''कल से रोज सुबह फल-तरकारी लेने सब्जी मण्डी जाया करो वरना मैं अब सब्जी बनाने वाली नहीं। इस बहाने घूमना भी हो जायेगा एवं सेहत भी ठीक रहेगी।'' ऐनक के पीछे उसकी आँखों में रुआब अधिक एवं करुणा कम नजर आ रही थी। शादी के कुछ वर्षों तक पत्नी प्यार देती है, फिर निर्देश एवं बाद में आदेश। बच्चे ज्यों-ज्यों जवान होते हैं, बीबी अपने पीछे एक खड़ी फसल तैयार देखती है। धीरे-धीरे उसके निर्देश, आदेश में परिवर्तित हो जाते हैं।

एक आज्ञाकारी पति की तरह दूसरे दिन से ही मैंने सब्जी-मण्डी जाना प्रारंभ कर दिया। मोर्निंग वॉक वास्तव में एक विलक्षण अनुभव था। उगते हुए सूर्य, कलरव करते पक्षी, उल्लास से अपने काम पर जाते मजदूर, वर्जिश करते जवान, चित्ताकर्षक मालूम होते। जब भी उगते हुए सूर्य को देखता मेरा आह्लादित मन परमात्मा के प्रति श्रद्धा से भर उठता। सुबह प्रकृति का सौन्दर्य चरम पर होता है। लगता प्रकृति की भाषा ही परमात्मा की भाषा है।

पहले दिन ही सब्जी-मण्डी में अपने ठेले पर खड़े, एक लड़के ने मेरा मन मोह लिया। उम्र बारह-तेरह वर्ष, गठा शरीर, आत्माभिमान से भरी बड़ी-बड़ी आँखें, कन्धे पर गमछा लगाये वह बरबस लोगों को खींच लेता। सब्जियों पर पानी छिड़कते अपनी बोली से बलात् भीड़ का ध्यान अपनी

ओर हर लेता। ''बाबूजी, फलों के राजा आम लीजिए! गुजरात की 'केसर केरी' है, खाकर बूढ़े भी जवान हो जाते हैं। इलाहाबाद के अमरूद लीजिए, मेम के गाल जैसे कश्मीर के सेब, ताज लगा ताजा बैंगन लीजिए, शिमला की रानी हरी मिर्च लीजिए।'' जाने क्या-क्या बोलता ही जाता था। उसकी उपमाएँ साहित्यकार को भी लजाती। वाणी में वशीकरण मंत्र बसा था, आँखों में सम्मोहन का जादू। मैं झोली हाथ में लिए बरबस उसकी ओर बढ़ा।

आम क्या भाव है? केसर असली तो हैं?

''सही असली हैं बाबूजी! यहां नकली माल बेचते ही नहीं। लकड़ी की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती।''

''और ये सेब क्या भाव है?''

''भाव क्या पूछते हैं बाबूजी, आप तो शक्ल से ही दानी लगते हैं। बच्चा दो पैसे ज्यादा कमा लेगा तो पुण्य आपको ही लगेगा।''

''छोटू उस्ताद!'' यकायक मेरे मुँह से यह सम्बोधन निकला। उसके बोलने का अंदाज ही कुछ ऐसा था। विलक्षण वाक्पटुता से भरी उसकी जिह्वा थी। उसके बाद से तो मैंने उसे छोटू उस्ताद ही कहना चालू कर दिया। एक बार उसने कहा भी, ''बाबूजी, मेरा नाम तो आनन्द है पर आप छोटू उस्ताद कहते हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।'' उसकी बाल-सुलभ बातें मुझे प्रसन्नता से सराबोर कर देती। यथा नाम तथा गुण, नाम के ठीक अनुरूप वह सदैव हंसता, मुस्कुराता, आनंद बिखेरता नजर आता। अब मैं उसका पक्का ग्राहक हो गया। शुरू-शुरू में आस-पास के ठेले वालों ने मुझे तोड़ने की कोशिश भी की, पर छोटू उस्ताद का कोई ग्राहक टूटने वाला नहीं था। एक समय के बाद मैंने उससे भाव-ताव करना भी बंद कर दिया। दरअसल सहज व्यापारिक वृत्ति के कारण प्रारंभ में मैंने होशियारी दिखाते हुए भाव-ताव भी किया पर बाद में मेरे अन्तर्मन ने ही इस पर रोक लगा दी। ठेकेदारी के धंधे में भगवान ने छप्पर फाड़कर आमदनी दी थी। सोचता, इंसाफ को खा जाने वाले, रिश्वतखोर सरकारी अफसरों की जेबें भी जब गर्म करनी पड़ती है तो इस बालक ने ऐसा क्या किया है। यह कोई उम्र है इसके कमाने-खाने की? अभी तो इसके खेलने-कूदने, पढ़ने के दिन हैं फिर भी मेहनत करके यह न जाने किस मजबूरी का मारा कमरतोड़ मेहनत कर रहा है? क्या मेरे को इस स्थान पर देख सकता हूँ ? अगर ये दो पैसे ज्यादा कमा लेगा तो अच्छा ही है, मेरी लापरवाही के कारण कुछ तो उसकी दुविधा कम होगी। उससे भाव-ताव करने के लिए मेरी आत्मा ने निषेध कर दिया।

हमारी मुलाकातें धीरे-धीरे स्नेह में बदल गई। मेरे हृदय में उसके प्रति एक ऐसा स्नेह अंकुरित हो रहा था जो स्वयं मेरे लिए अवर्णनीय है। उसके मंत्र-मुग्ध हाव-भाव मुझे भावुक कर देते, लगता किसी पूर्व जन्म में वो मेरा ही अंश हो। एक बार उसकी बिक्री नहीं हो रही थी तो मैं जानबूझकर कुछ रुपये छोड़ आया। थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि वो बेतहाशा दौड़ता हुआ मेरे पीछे आया। तपाक से बोला, ''बाबूजी, आप इतने सारे रुपये ठेले पर भूल आए हैं।'' उसके चेहरे का ईमाने-नूर एवं संस्कारों का आलोक मुझे गद्गद् कर गया। इतनी तकलीफ में भी उसकी नीयत नहीं बदली, इस विपन्नता में भी वह नहीं डिगा। एक बार मैं उसके लिए गुड्डू के पुराने कपड़े भी ले गया। गुड्डू उसकी ही उम्र के आस-पास था, पर उसने लाख कहने पर भी कपड़े नहीं लिये, ''माँ-बाबूजी ने मना कर रखा है।'' उसकी सीधी बात सुनकर मैं झेंप गया। मुझे दुःख न हो अतः मुस्कुराते हुए बोला, ''इस दिवाली पर आपसे नया पेन्ट-शर्ट लूंगा, जैसे आपका गुड्डू आप से लेता है।'' स्वाभिमान के उस पहाड़ के आगे मैं नतमस्तक हो गया। इतना कष्ट सहकर भी गरीबी उसकी आत्मा का पतन नहीं कर सकी, जमीर अब भी जिन्दा था।

मैं वर्षों से निर्माण कार्यों के सरकारी ठेके लेने का कार्य करता था। सौभाग्य से इस बार एक बहुत बड़ा कॉन्ट्रेक्ट हाथ लगा। इतना बड़ा ठेका मिलना मेरी कल्पना से भी परे था, लगा जैसे लॉटरी लग गई। मेरे कार्यक्षेत्र में अंगदी पाँव जमाने का यह सुनहरा मौका था। मैं दिन-रात काम में लग गया। काम की आपा-धापी में एक माह तक सब्जी लेने नहीं जा सका। सुबह-सुबह छोटू उस्ताद मेरे ख्यालों में कई बार आता, मोर्निंग वॉक का आनन्द भी मुझे पुनः पुकारता पर यह कॉन्ट्रेक्ट मेरी इमेज का प्रश्न था। एक माह में मैंने काम की पूरी योजना बना ली। काम मुलाजिमों एवं अन्यों में बाँट दिया। अब मुझे सिर्फ देखभाल करनी थी। मैंने पुनः मोर्निंग वॉक एवं सब्जी लाने की ड्यूटी प्रारंभ करने का निश्चय किया।

अगली सुबह मैंने सब्जी मण्डी की राह ली। छोटू उस्ताद से मिलने की उत्कण्ठा मेरी चाल को और तेज कर रही थी। मैं सीधा वहीं पहुंचा जहां वह रोज ठेला खड़ा करता था, पर देखकर हैरान रह गया-वहाँ छोटू उस्ताद नहीं था। मैं उसे ऐसे ढूंढने लगा जैसे स्वयं मेरा पुत्र भीड़ में खो गया हो। अजीब से विचार मेरे मन में कौंधने लगे। उसके बारे में जानने को मैं अधीर हो उठा। मैंने पास खड़े ठेले वाले से पूछा, ''छोटू उस्ताद कहां है?'' सभी ठेले वाले जानते थे कि मैं उसे छोटू उस्ताद कहता हूँ। उत्तर मिला, ''बाबूजी, वह बीस दिन से बीमार है, उसे जन्म से ही दिल की कोई बीमारी है। इन दिनों साँस लेने में भी बहुत परेशानी होती है, बस खटिया ही पकड़े है। विस्मय से मेरी आँखें फैल गई, मन काँप उठा। ठेले वाले से पता लेकर मैंने छोटू उस्ताद के घर की राह ली। मैं यह सोच कर परेशान था कि उसने अपनी बीमारी का जिक्र क्यों नहीं किया? इतनी बीमारी में भी वह सदैव हँसता, मुस्कुराता, महकता हुआ फूल नजर आता था। अपनी दुरवस्था एवं जख्मों का उसने कभी बयान नहीं किया। मुझे स्वयं पर भी बहुत गुस्सा आ रहा था कि मैंने उसके बारे में जानने की कोशिश क्यों नहीं की। मेरी निष्ठुरता मुझे धिक्कार रही थी।

मैं उसके घर पहुँचा। छोटू उस्ताद एक खटिया पर पड़ा गहरी सांसें ले रहा था। घर में मुश्किल से चार-पांच लोहे के बर्तन, कुछ फलों की टोकरियां, और ऐसी ही कुछ वस्तुएँ रखी थी। सभी उसकी विपन्नता की कहानी कह रही थी। पास ही फटे हाल एक अधेड़ उम्र का आदमी एवं एक अपंग महिला बैठी थी। मुझे देखते ही छोटू उस्ताद की आँखें सजल हो उठी। अपनी सारी आत्मशक्ति को बटोर कर उसने मुस्कुराने की असफल कोशिश की पर एक निरीह बालक इतना दर्द कैसे सहन करता। एक डॉक्टर भी वहाँ स्टूल पर बैठा था, शायद बस्ती के दो-चार लोग मिलकर उसे ले आए थे। स्थिति समझने में मुझे देर नहीं लगी। मैंने डॉक्टर से बाहर आने का निवेदन किया एवं वस्तुस्थिति बताने का आग्रह किया। डॉक्टर ने बताया कि वह 'ब्ल्यू बेबी' है एवं जन्म से ही उसके हृदय में छेद है। अब उसका ऑपरेशन तुरन्त जरूरी है, जिसके लिए दो लाख रुपये की जरूरत होगी। बस्ती वालों ने मुझे बताया कि अन्दर बैठे उसके पिता अंधे हैं एवं माँ एक हाथ से लाचार है। बस यही उनका एकमात्र सहारा है।

छोटू उस्ताद के जीवन के इस पहलू को जानकर मैं अवाक रह गया, जैसे कलियुग में श्रवणकुमार ने पुनः जन्म लिया हो। इस समय मुझे वह आसमान की ऊँचाइयों में चमकता एक नक्षत्र लग रहा था। वह अन्दर पड़ा कराह रहा था, बाहर मेरे मन मस्तिष्क में समुद्र मंथन चल रहा था। यह दीये और तूफान की लड़ाई थी। मेरे हृदय में छोटू उस्ताद का कद आज बहुत बढ़ गया था। दरअसल आज अपने कद को मैं उसके सामने बहुत छोटा पा रहा था। एक बालक के संघर्ष एवं जिम्मेदारी वहन करने के हौसले से मैं अभिभूत हो गया। मैंने उसी वक्त निर्णय कर लिया। यह दीया पैसे की कमी के कारण नहीं बुझ सकता। मैंने ऑपरेशन का सारा खर्च स्वयं वहन करने का निर्णय ले लिया। अपनी दुआओं के सारे खजाने को समेट कर जीवन में शायद पहली बार, दिल की गहराइयों से, मैंने उस परवरदिगार की रहमत को पुकारा जो सारी दुनिया का रहनुमा है। हे ईश्वर! हम तेरी ही इबादत करते हैं, तुम्ही पर ईमान लाते हैं एवं तुझ ही से मदद मांगते हैं।

ईश्वर बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है। वह बिना कानों सब कुछ सुनता है, बिना पाँवों सब जगह चलता है एवं बिना हाथों सब कुछ कर जाता है। उसकी करनी अलौकिक है, उस दयानिधि की माया वर्णनातीत है।

सच्चिदानंद घन परमात्मा सुख-स्वरूप एवं आनन्द-स्वरूप है। सूर्य से कभी अंधकार नहीं निकल सकता, वह तो सिर्फ रोशनी ही देता है। जो उसकी पनाह लेता है, निःसंदेह महफूज रहता है। छोटू उस्ताद का ऑपरेशन सफल रहा। पन्द्रह दिन में उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई, शीघ्र ही वह भला-चंगा हो गया।

मैं फिर सब्जी-मण्डी में एक ठेले के आगे खड़ा था। छोटू उस्ताद का शरीर एवं मेरी आत्मा नई सुगन्ध से महक रही थी। उसकी उपकृत आंखें जैसे कह रही थी, 'बाबूजी आप मेरे भगवान हो।' मैं और अधिक नहीं ठहर सका, आज तुरन्त सब्जी लेकर घर आ गया। एक विचित्र आनन्द आज मेरी आत्मा को आलोकित कर रहा था।

अगले दिन से मैंने मोर्निंग वॉक की राह बदल ली।

-हरिप्रकाश राठी

कहानी संग्रह 'अगोचर' से साभार

प्रमादी नहीं, पुरुषार्थी बनो

-भगवान महावीर

तीर्थंकर महावीर कहें या भगवान महावीर - हमारे लिए तो वे पूज्य हैं, आराध्य हैं। उनके उपदेश हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होंने अनेक उदात्त शिक्षाएँ दी हैं। वे अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि शाश्वत मूल्यों की ओट मानव जाति का ध्यान आकर्षित करते हैं। उन्हीं शिक्षाओं में से एक है- प्रमादी नहीं, पुरुषार्थी बनो। इस आलेख में हम इस विषय पर कुछ चर्चा करने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रमाद अर्थात् आलस्य। मन में यह भाव पैदा होना कि इस काम को बाद में कर लेंगे। यदि बिना उचित कारण के हम उस कार्य को कल पर टालतें हैं, तो यह प्रमादवश ऐसा किया गया है। ऐसे भाव हमारे मन में नहीं आने चाहिए। यदि आप अपने विचारों से संतुष्ट हैं, कार्य उचित हैं तो उसे यथासंभव सम्पन्न कराने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य श्री विद्यासागरजी के 'अनिर्वचनीय व्यक्तित्व' पर लिखित पुस्तक 2 - प्रकाशक जैन विद्यापीठ, सागर (मध्य प्रदेश) के पृष्ठ 150 का जब मैं अवलोकन कर रहा था, तो आश्चर्य हुआ कि उन्हें प्रमाद छूता भी नहीं है।

एक उदाहरण उसमें दिया हुआ है-

''आचार्यश्री जी का सन् 2016 का चतुर्मास हबीबगंज, भोपाल, मध्य प्रदेश में चल रहा था। वे नित प्रति शौच क्रिया हेतु लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर जाया करते थे। एक दिन पेट गड़बड़ हो गया। उस दिन उन्हें तीन बार शौच के लिए जाना पड़ा। संघस्थ साधुओं ने निवेदन किया कि आप बार-बार दूर न जाएं, पास वाले स्थान का उपयोग कर लीजिए। पर उन्होंने अपने कर्त्तव्यों में कोई प्रमाद नहीं दिखाया। उस दिन आचार्यश्री जी बारह किलोमीटर चले। शारीरिक बाधा के होते हुए भी उन्होंने अपनी चर्या को सदोष नहीं होने दिया। धन्य है गुरुदेव और उनकी चर्या। उन्हें शैथिल्य बर्दाशत नहीं। उनके उत्साह को देखकर प्रमाद को भी प्रमाद आ जाए।

हमारे जीवन में कुछ नियम अवश्य होने चाहिए, अनुशासन होना चाहिए। आलस्य जीवन का पीड़ादायक शत्रु है। पाश्चात्य दर्शन में सात महापाप माने गए हैं।

1. घमंड 2. लालच 3. भोग 4. ईर्ष्या 5. लोलुपता 6. क्रोध 7. आलस्य।

आध्यात्मिक क्षेत्र में आलस्य का अर्थ है मुक्ति के लिए आलस्य भाव। आत्मा की मुक्ति के लिए सार्थक प्रयास करने चाहिए। इसके लिए जो भी सत्कर्म हों, सकारात्मक प्रयास हों, सदैव करना चाहिए और इसमें विलम्ब नहीं करना चाहिए।

''शुभस्य शीघ्रम''

संत कबीरदास जी कहते हैं-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥

इसका अर्थ यही है कि समय पर कार्य पूरा किया जाए। शैथिल्य अनुचित है। कालान्तर में इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लंदन में आपूर्ति मुख्यालय में लिखा था- "For want of a nail, the kingdom was lost."

बेंजामिन फ्रैंकलिन अमेरिका के विविध व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने ही यह महत्वपूण संदेश दिया था। आज बालकों को भी यह गीत के रूप में पढ़ाया जाता है। इसलिए उचित कार्य में विलम्ब अनुचित है।

जीवन में अच्छे विचार, ज्ञान का उदय आकाश में बिजली की तरह कौंधता है। इसके कोई आधारभूत सिद्धांत नहीं हैं। महात्मा गौतम बुद्ध को इसी तरह अकस्मात, कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात उन्होंने शाश्वत मूल्यों की अनेक निर्मल शिक्षाएँ दी-जैसे- 'अप्प दीयो भव।' वैसे 'त्रिपिटक' ग्रंथ में और भी अनेक मूल्यवान उपदेश है जैसे त्रिरत्न, चार आर्य सत्य और अष्टांग सत्य मार्ग। यह ग्रंथ पाली भाषा में लिखा गया है।

सद्भाव आएँ और हम कार्य करने में विलम्ब करें तो कई नकारात्मक विचार आ सकते हैं और फिर कार्य निष्पादन ही नहीं हो पाता है।

ऐसी कहावत है- "Opportunity knocks only once at one's door" सुअवसर एक बार ही आता है, इसे हाथ से मत जाने दीजिए। क्रिकेट में यदि गेंद का कैच एक बार छूट

जाए तो यह अत्यंत पीड़ादायक भी हो सकता है, आप मैच ही हार सकते हैं।

महान नाटककार शेक्सपीयर लिखते हैं- 'समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।'

शांति के नोबेल पुरुस्कार से अलंकृत श्री श्री दलाई लामा कहते हैं- वक्त की कद्र कीजिए। समय को हीरे-मोती, चाँदी व सोने से भी कहीं अधिक मूल्यवान समझिए।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषार्थ का महत्व है। एक सेकण्ड से ओलिम्पिक में स्वर्ण पदक हाथ से निकल जाता है। उस व्यक्ति से पूछिए कि एक सेकण्ड का क्या मूल्य है।

स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है-

'उठो, जागो, ज्ञान प्राप्त करो और समाज के लिए उपयोगी बनो।'

आलस्य करने से प्रमाद करने से, यह सब संभव नहीं है। जीवन में लक्ष्य होना चाहिए। जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए, सार्थक प्रयास करने चाहिए।

नोबेल पुरस्कार विजेता कथाकार अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने लिखा है कि समय पर काम पूरा करके हम अनेक परेशानियों से बच सकते हैं। वे बचपन का एक संस्मरण लिखते हैं कि एक बार उनके स्कूल में शिक्षक ने बच्चों से कहानी लिखने को कहा और एक महीने का समय दिया। बालक हेमिंग्वे कहानी लिखने में बहुत होशियार थे, उनका यह शौक भी था। इसलिए उन्होंने सोचा कि कहानी को एक दिन में ही लिखी जा सकती है। अतः वे खेल-कूद में ही मस्त रहे। उनकी बहन ने उनसे बार-बार काम पूरा करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। अंत समय में हड़बड़ाहट में उन्होंने कहानी लिखना शुरू किया। कहानी तो पूरी कर ली पर अधूरे मन से कहानी शिक्षक को दी। नतीजा यह हुआ कि पुरस्कार किसी और छात्र को मिला। हेमिंग्वे बहुत निराश होकर लौटे। उनकी बहन ने कहा कि प्रमाद के कारण ही तुम्हें यह दिन देखना पड़ा। इसके बाद वे हमेशा समय पर कार्य करते रहे। यह है सीख सुहानी। समय पर करें काम। प्रमाद को पास भी फटकने न दें।

महावीर जयंती के पवित्र, पावन एवं पुनीत पर्व पर क्या हम इस सीख को श्रृद्धापूर्वक स्मरण कर सकते हैं-

'प्रमादी नहीं पुरुषार्थी बनो।'

-सुभाषचन्द्र पालीवाल
फ्लैट नं. 1 एम.डी. वैष्णवी धाम, ब्लाक सी,
जोका पोस्ट ऑफिस, ठाकुरपुकुर, कोलकाता

शाखा समाचार

शाखा मुरैना

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा शाखा मुरैना के तत्वाधान में धर्मप्रेमी जैन बंधुओं की तीर्थ यात्रा सम्पन्न हुई, जिसमें शाखा के उत्साही अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र जैन, शाखा मंत्री श्री प्रमोद कुमार जैन एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री नेमीचन्द्र जैन सर्राफ, श्री ओम प्रकाश, श्री जगदीश चन्द्र जैन एवं श्री विजय जैन ने तीर्थ यात्रा के संचालन का दायित्व सुचारू रूप से संचालित किया। तीर्थयात्री मुरैना से दिनांक 21.02.2022 को स्लीपर बसों से रात्रि 9 बजे रवाना हुए।

तीर्थ यात्रियों ने सिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर पहुंच कर शिरोमणि आचार्य जी विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में चल रहे भव्य पंचकल्याणक महोत्सव देखा। इसके अतिरिक्त अन्य तीर्थ क्षेत्रों पपोराजी, द्रोणागिरी, नैनागिरि, पावागिरि आदि दस क्षेत्रों की तीर्थ वंदना की एवं पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस दौरान कुण्डलपुर के बड़े बाबा एवं छोटे बाबा सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अलावा कई आचार्य एवं मुनि, आर्यिका, अनेकों त्यागी वृत्तियों के दर्शन का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

शाखा अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र जैन ने इस यात्रा के निमित्त 51000/- का आर्थिक सहयोग प्रदान कर प्रशंसनीय कार्य किया। वे बधाई के पात्र हैं। तीर्थ यात्री दिनांक 25.02.2022 को प्रातःकाल सानंद मुरैना वापिस आये।

बधाई

Dr. Neha Jain (W/o Mr. Yash Jain, D/o Sh. Jaiprakash Jain, Daughter in law of Sh. Trilok Jain & Smt. Rajeshwari Paliwal), Durgapura, Jaipur, received Humanitarian Excellence Award 2021 at a ceremony organized in New Delhi by I Can Foundation. Dr. Neha Jain is presently working with Mahatma Gandhi Hospital, Sitapura, Jaipur as an Associate Professor (Occupational Therapy) and President of Smt. Somadevi Women Welfare Society, Jaipur

श्री अरिहंत जैन पुत्र श्री प्रवीण कुमार जैन (कंजौली वाले) ई-13, राम नगर विस्तार, सोडाला, जयपुर ने सी.ए. परीक्षा 2022 पास कर समाज का गौरव बढ़ाया है। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा अरिहंत जैन के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

श्री चिराग जैन सुपुत्र श्री दिनेश चन्द जैन, सुपौत्र श्री रंगीलाल जी जैन, हरसाना अलवर वाले, 1/97, हा.बो., शांति कुंज, अलवर का चयन इसरो (तमिलनाडू) में वैज्ञानिक के पद पर हुआ है। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा चिराग जैन के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

श्री मयंक जैन सुपौत्र श्री महावीर प्रसाद जैन, सुपुत्र श्री रविन्द्र कुमार-संगीता जैन, मालवीय नगर, अलवर का चयन राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में सहायक अभियन्ता के पद पर हुआ है। जोकि वर्तमान में जे.ई.एन. के पद पर जल संसाधन विभाग टोंक में कार्यरत हैं। मयंक जैन गार्गी जैन (आई.ए.एस., डिप्टी सैक्रेटरी साईन्स एण्ड टेकनोलोजी गुजरात) के भाई हैं। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा मयंक जैन के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती है।

एक आदमी ने एक भूत पकड़ लिया और उसे बेचने शहर गया। संयोगवश उसकी मुलाकात एक सेठ से हुई। सेठ ने उससे पूछा- भाई! यह क्या है?

उसने जवाब दिया कि यह एक भूत है। इसमें अपार बल है। कितना भी कठिन कार्य क्यों न हो, यह एक पल में निपटा देता है। यह कई वर्षों का काम मिनटों में कर सकता है।

सेठ भूत की प्रशंसा सुनकर ललचा गया और उसकी कीमत पूछी। उस आदमी ने कहा- कीमत बस पाँच सौ रुपए है। कीमत सुनकर सेठ ने हैरानी से पूछा- बस पाँच सौ रुपए?

उस आदमी ने कहा- सेठ जी! जहाँ इसके असंख्य गुण हैं वहाँ एक दोष भी है। अगर इसे काम न मिले तो मालिक को खाने दौड़ता है।

सेठ ने विचार किया कि मेरे तो सैकड़ों व्यवसाय हैं, विलायत तक कारोबार है। यह भूत मर जाएगा पर काम खत्म न होगा। यह सोचकर उसने भूत खरीद लिया।

भूत तो भूत ही था। उसने अपना चेहरा फैलाया बोला- काम! काम! काम! काम!

सेठ भी तैयार ही था। तुरंत दस काम बता दिए। पर भूत उसकी सोच से कहीं अधिक तेज था। इधर मुंह से काम निकलता, उधर पूरा होता। अब सेठ घबरा गया।

संयोग से एक संत वहाँ आए। सेठ ने विनयपूर्वक उन्हें भूत की पूरी कहानी बताई। संत ने हँस कर कहा- अब जरा भी चिंता मत करो। एक काम करो। उस भूत से कहो कि एक लम्बा बाँस लाकर, आपके आँगन में गाड़ दे। बस, जब काम हो तो काम करवा लो, और कोई काम न हो, तो उसे कहें कि वह बाँस पर चढ़ा और उतरा करे। तब आपके काम भी हो जाएँगे और आपको कोई परेशानी भी न रहेगी।

सेठ ने ऐसा ही किया और सुख से रहने लगा।

यह मन ही वह भूत है। यह सदा कुछ न कुछ करता रहता है। एक पल भी खाली बिठाना चाहो तो खाने को दौड़ता है। श्वास ही बाँस है। श्वास पर नामजप का अभ्यास ही, बाँस पर चढ़ना उतरना है।

हम भी ऐसा ही करें। जब आवश्यकता हो, मन से काम ले लें। जब काम न रहे तो श्वास में नाम जपने लगो। तब आप भी सुख से रहने लगेंगे।

विधवा सहायता

★ **श्री अशोक जी जैन, हार्दिक जैन**, टी-12ए, उमासूत नगर, वेजलपुर, अहमदाबाद ने अपने पिताजी स्व. श्री देवीलाल जी जैन एवं मातृश्री स्व. श्रीमती मीना देवी जी जैन के सप्तम पुण्यतिथि पर विधवा सहायता हेतु रु. 2100/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4936)*

★ **श्री अशोक कुमार जी जैन,** मण्डावर ने स्व. श्री प्रकाश चन्द जी जैन की पुण्य स्मृति (दि. 01.01.2022) पर विधवा सहायता हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5046)*

★ **श्री छगन लाल जी, अशोक कुमार जी जैन,** फ्लेट नं. 308, टॉवर नं. 3, अपना घर, शालीमार, अलवर ने स्व. श्रीमती प्रेम कुमारी जी जैन धर्मपत्नी श्री छगन लाल जी जैन की पुण्य स्मृति (दि. 19.01.2022) पर विधवा सहायता हेतु रु. 1100/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5047)*

★ **श्री रमेश चन्द जी पंकज जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 7000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5048)*

★ **श्री रमेश चन्द जी पंकज जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 4000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5049)*

★ **श्री महावीर प्रसाद जी जैन** (मुबारिकपुर वाले), 455, स्कीम नं. 2, लाजपत नगर, अलवर ने विधवा सहायता हेतु रु. 12000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5050)*

★ **श्री नीरज जी जैन** पुत्र श्री सतीश कुमार जैन (मौजपुर वाले), डी-81, अम्बेडकर नगर, अलवर ने चि. मोहित जैन पुत्र श्री संजय जैन संग दिपाली जैन पुत्री श्री जितेन्द्र जैन के शुभ विवाह दि. 05.02.2022 को सम्पन्न होने पर विधवा सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5101)*

★ **श्री पवन कुमार जी जैन,** बी-387, वैशाली नगर, जयपुर ने अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती शशी जी जैन की छठी पुण्यतिथि पर विधवा सहायता हेतु रु. 12000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5102)*

★ **श्री रमेश चन्द जी पंकज जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 5000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5103)*

★ **श्री रमेश चन्द जी पंकज जैन,** दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल, 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 4000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5104)*

★ **श्री दीपक जी जैन** पुत्र श्री त्रिलोक चन्द जैन (मण्डावर वाले) इन्कम टैक्स कॉलोनी, दुर्गापुरा, जयपुर ने अपने पुत्र धरून जैन के जन्मदिवस के उपलक्ष पर विधवा सहायता हेतु रु. 12000/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 5105)*

महासभा सदस्यता

1. **श्री अंकुश जी जैन** पुत्र श्री रविन्द्र कुमार जैन, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5106)*
2. **श्रीमती वैशाली जी जैन** धर्मपत्नी श्री अंकुश जैन, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5107)*
3. **श्री अभिषेक जी जैन** पुत्र श्री रविन्द्र कुमार जैन, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5108)*
4. **श्रीमती अदिती जैन** धर्मपत्नी श्री अभिषेक जैन, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5109)*
5. **श्री रविन्द्र कुमार जी जैन** पुत्र श्री कन्हैया लाल, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5110)*
6. **श्रीमती श्यामलता जी जैन** धर्मपत्नी श्री रविन्द्र कुमार जैन, 3/634, काला कुंआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर *(र.सं. 5111)*
7. **श्री विकास चन्द्र जी जैन** पुत्र श्री महेश चन्द्र जैन, ग्राम पोस्ट कठवारी, तहसील किरावली, जिला आगरा-283101 *(र.सं. 4933)*
8. **श्रीमती गायत्री जैन** धर्मपत्नी श्री विकास चन्द्र जैन, ग्राम पोस्ट कठवारी, तहसील किरावली, जिला आगरा-283101 *(र.सं. 4934)*

भावभीनी श्रद्धांजलि

प्रथम पुण्यतिथि

स्व. श्री दुलीचन्द जी जैन

(केसरा वाले)

(स्वर्गवास : 08.03.2021)

सप्तम पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती लीलावती जी जैन

(स्वर्गवास : 26.04.2015)

हम सभी परिवार के सदस्यों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।
आपका कर्मठ व्यक्तित्व सदा हमारी प्रेरणा बना रहे।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
महेश चन्द जैन-मधु जैन
प्रदीप कुमार जैन-निधी जैन

पौत्री-पौत्री दामाद :
हिमानी जैन-पीयूष जैन

पौत्र, पौत्री :
आकांक्षा जैन, दक्ष जैन, मानव जैन

पुत्री-दामाद :
मिथलेश जैन-मुकेश जैन
मंजु जैन-महावीर प्रसाद जैन
चन्द्रप्रभा जैन-वीरेन्द्र जैन

निवास :
मधुवन कॉलोनी, सरकारी अस्पताल के पीछे, खेरली (अलवर)
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

** संशोधित दरें दिनांक 25.01.2022 से लागू*

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	3,000/-
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-

पत्रिका सदस्यता

पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

सूचना

(अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।

(ब) जो सदस्य अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 50/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 600/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

- *पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।*
- *पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।*
- *पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।*
- *गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।*

आप पत्रिका की भुगतान राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से या ऑनलाईन खाते में भी भेज सकते हैं, विवरण निम्न है :-

"SHRI PALLIWAL JAIN PATRIKA"
Bank Name : **BANK OF BARODA** • Branch : **DURGAPURA, JAIPUR**
A/c No.: **38260100005783** • IFSC Code : **BARB0DURJAI**

पत्रिका राशि ऑनलाईन जमा कराने के बाद संयोजक को सूचना देवें एवं ट्रांसफर राशि का स्क्रीन शॉट भी भेजें, इसके अभाव में जमा राशि का समायोजन किया जाना संभव नहीं होगा।

चन्द्रशेखर जैन, संयोजक पत्रिका
मो.: 9829134926

मान्यवर,

सभी साधर्मी बन्धुओं को सुचित किया जाता है कि अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा को विधवा सहायता एवं अन्य सहयोग प्रदान करने हेतु राशि चैक, नकद या ऑनलाईन महासभा के खाते में जमा करवाई जा सकती है, जिसका विवरण निम्न है :-

"AKHIL BHARTIYA PALLIWAL JAIN MAHASABHA"
Bank Name : **STATE BANK OF INDIA** • Branch : **C-SCHEME, JAIPUR**
A/c No.: **51003656062** • IFSC Code : **SBIN0031361**

राशि जमा कराने के पश्चात अर्थमंत्री को अवश्य सूचित करें, जिससे जमा की रसीद प्रेषित की जा सके।

अजीत कुमार जैन, अर्थमंत्री महासभा
मो.: 9413272178

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)

(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)

(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **हितेक्षा जैन** पुत्री श्री निर्दोष कुमार जैन, जन्मतिथि 23.01.1997 (प्रातः 05:50 बजे, अजमेर), शिक्षा- डबल एम.कॉम., गोत्र : स्वयं- गंगेरीवाल, मामा- खैर, सम्पर्क : अशोक नगर, नारीशाला रोड, अजमेर, मो.: 9251002206, 9413824268 *(जनवरी)*

★ **चित्राक्षी जैन** पुत्री श्री पदम चंद जैन, जन्मतिथि 15.09.1992 (प्रातः 3.15, अलवर), कद 5'-6'', शिक्षा- एम.टेक. (कम्प्यूटर साईंस), गौत्र : स्वयं- अठवरसिया , मामा- चौधरी, सम्पर्क : 2-क -292, शिवाजी पार्क, अलवर (राज.), मो.: 9413048598 *(फरवरी)*

★ **Naincy Jain** D/o Sh. Shivdayal Jain, DoB 19.06.1992 (at Gwalior), Height- 5'-4", Education- BE (Computer Science), Pursuing MS in Artificial Intelligence, Job- Working in Airbus India Bangalore, Contact : 8989668259, 8989668258, Email : naincyjain999@gmail.com *(Jan.)*

★ **Diksha Jain** D/o Late Sh. Yogesh Jain, DoB 28.09.1994 (at 10:45 am, Jaipur), Height- 5'-3", Fair Complexion, Sober, Education : B.Com., MBA (HR and Marketing) R.A. Podar Institute of Management, Jaipur, Employment- Akeo Software Solutions Pvt. Ltd Jaipur - A global innovative technology driven company with offices at India & Norway. (HR Generalist) Annual CTC: 4.2 Lakh, Gotra : Self- Danduria, Mama- Barwasiya, Contact : Anita Jain, 86, Magan Villa, Shreevihar Colony, JLN Marg, Jaipur-302018, Mob.: 9829134926, 8560826019, 9828058599, Email: csjain30@yahoo.co.in *(Jan.)*

★ **Pooja Jain** (Manglik) D/o Sh. Satish Kumar Jain, DoB 22.03.1996 (at 5:00 pm, Kota), Height- 5'-2", Education- M.A., D.EL.E.D. (BSTC), Gotra : Self- Nageshwariya, Mama- Chodbambar, Contact : C/o Deepak Sr. Sec. School, Shivpura, Kota-324009, Mob.: 9414317362, 9414936428 *(Jan.)*

★ **Kavita Jain** D/o Sh. Sheetal Prasad Jain, DoB 06.05.1995 (at 7:25 am, Hindaun City), Height- 5'-5", Education- B.Tech (Electronics & Communications), Job- Presently Working S.O. in ICICI Bank Lalsot (Dausa), Gotra : Self- Athbarsiya, Mama-Baronia, Contact : 86, Vrindavan Vihar, Khaniya, Agra Road, Jaipur, Mob.: 9887821975, 8769485510 *(Jan.)*

★ **Priyanka Jain** D/o Sh. Lokesh Kumar Jain, DoB 28.05.1996 (at 10:00 am, Alwar), Height- 155 cms., Fair Complexion, Education- MBA, Gotra: Self- Chowdbambar, Mama- Kotiya, Contact : Jain Petrol Pump, Alwar Road, Lacchmangarh, Mob.: 9414812360, 9887354080, Email : nitesh19jain@gmail.com *(Jan.)*

★ **Vidhi Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Anil Jain, DoB 02.11.1993 (7:40 am, Jaipur), Height 5'-1", Smart and Wheatish, Education- B.E. (EC) Indore, Working in Hexaware at Pune, Package- 18.25 LPA, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Nangeswariya, Contact : Sh. Anil Kumar Jain, Mob.: 9926063720 *(Feb.)*

★ **Shefali Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 11.08.1994, (at 10:20 pm, Agra), Height- 5'-7", Fair Complexion, Education- B.Tech (CS), Occupation- Software Engineer, Gotra : Self- Barwasiya, Mama- Gwalriya, Contact : Plot No. 6, Bodla, Bichpuri Road, Agra, Mob.: 9897454782, 9259222342 *(Feb.)*

★ **Shradha Jain** D/o Late Sh. Ashok Jain, DoB 23.05.1994 (at 00:30 am, Alwar), Height 5'-4", Education- M.Sc. (Chemistry), B.Ed.(Teacher in a reputed school in Alwar), Contact : A-46 Arya Nagar, Alwar-301001, Mob: 9530243608, 9460309548 *(Feb.)*

★ **Sonali Jain** D/o Sh. Rajkumar Jain, DoB 06.04.1999 (at 11:55 pm, Agra), Height- 5'-2", Education- M.Com., Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Kotiya, Contact : 37/470, Nagla Padi, New Agra-282005 (U.P.), Mob.: 7520244499 (Whatsapp), 9412811825, Email : yatish.jain1008@gmail.com *(Feb.)*

★ **Vidhi Jain** D/o Sh. Satish Chand Jain, DoB

16.12.1994, Height 5'-4", Fair Complexion, Education- CA (First Attempt), CIA (USA), Working in Tata Capital Ltd., Mumbai, Package- 13.50 LPA, Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Baroliya, Contact : A-603, Sonam Daffodil, Golden Nest Phase 2, Mira-Bhay Road, Bhayandar (East), Mumbai, Mob.: 8779967870, 8097672702, Email : satishjaind@gmail.com *(Feb.)*

★ **Riya Jain** D/o Sh. Shital Prasad Jain, DoB 05.09.1995 (at 5:02 p.m., Alwar), Height 5'-6", Education- B.Sc. (H) Chemistry, M.Sc. Chemistry (Hindu College,DU), B.Ed., Working at- Vedantu Innovations Pvt. Ltd. (Noida), Gotra : Sangarwasia, Contact : Raj Nagar Part-2, Palam Colony, New Delhi, Mob.: 9560649574, 9899076686 *(Feb.)*

★ **Shipra Jain** D/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 23.03.1992 (at 12:30 am, Alwar), Height- 5'-4", Education- B.Com., JBT, M.Sc., MCA, Working in Bank, Gotra : Self- Balanwasia, Mama- Badaria, Contact : 215/3, Gopal Nagar, Gurgaon (Haryana), Email : nkjain1012@yahoo.com *(Feb.)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Padam Jain, DoB 10.08.1993 (Morar, Gwalior), Height- 5'-4", Fair Color and Smart, Education- M.Com., B.Ed., CPCT, PGDCA (Computert Diploma), Gotra : Self- Chombra, Mama- Salwadya, Contact : D-3, Hariom Colony, 7 No. Choraha, Mob.: 8109962448, 8962208384 *(Feb.)*

★ **Khyati Jain** (Manglik) D/o Sh. Pramod Kumar Jain, DoB 10.02.1994 (at 7:05 am), Height- 5'-2", Education- B.Sc., Diploma of Ueban Planning Development (UPD) B.T.C. & UP Tat, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Batoniya, Contact : 32D/12A, New Abadi, Rashmi Nagar, Mugal Road, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 94116845669, 8279988481 *(Feb.)*

★ **Harshita Jain** D/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 16.11.2000 (at 4:45 am, Bikaner), Height- 5'-8", Education- B.Com., Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Bhatyariya, Contact : 16/538, Chopasani Housing Board, Jodhpur-342008, Mob.: 9413649165, 8107593346, Email : prakshaljain27@gmail.com *(Feb.)*

★ **Nikita Jain** D/o Sh. Vikas Jain, DoB 03.02.1997 (at 4:15 pm, Ajmer), Height 5'-1", Education- BBA, MBA (HR & Finance) from Banasthali Vidyapeeth, Gotra : Self- Athwarsiya, Mama- Maimuda, Contact : Madhuvan Enclave, Krishna Nagar, Mathura, Mob.: 9412830006, Email : vikasjainmtr@gmail.com *(March)*

★ **Tanvi Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Navratan Jain, DoB 26.12.1992 (at 4:45 pm, Agra), Height- 5ft., Education- MA, B.Ed. (English), Job- Teacher, Contact : 7088329449, 7467082226 *(March)*

★ **Pragati Jain** D/o Sh. Sushil Kumar Jain (Seth House, Karoli), DoB 26.03.1994 (at 5:36 pm, Jaipur), Height- 5ft., Education- B.Tech-CSE (JECRC, Jaipur), Job- Banking Assistant (Bank of Baroda), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Behtaria, Contact : 119/55, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9829671599, 8233091599, 9785768686, *(March)*

★ **Mrinal Jain** D/o Sh. Bharat Bhushan Jain, DoB 09.08.1994 (at 9:20 am, Palam New Delhi), Height- 5'-2", Fair Complexion, Education- M.Com. & MBA, Job- Working in MNC International Hotels Group (IHG), Gurugram, Haryana as Senior Analyst, Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Barolia, Contact : H.No. WZ-246, Palam Village, New Delhi-110045, Mob.: 9899012731, 9013454299 *(March)*

★ **Amisha Jain** (Ashik Manglik), D/o Sh. Kamal Kumar Jain, DoB 10.07.1997 (at 1:56 pm), Height- 5'-3", Education- B.Com. & MBA, Job- HDFC Mutual Fund, Sanjay Palace, Agra, Contact : 103, Chhotti Chhapeti, Firozabad-283203 (U.P.), Mob.: 7351568144, 7417650935, Gotra : Self- Thakuriya, Mama- Chodha parivaar *(March)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **शुभम जैन** पुत्र श्री अशोक कुमार जैन, जन्मतिथि 08.07.1993 (सायं 05.48 बजे), कद- 5'-6'', शिक्षा- बी.कॉम., एम.कॉम., एल.एल.बी, गोत्र- स्वयं- आमेश्वरी, मामा - चौधरी, सम्पर्क : जैन मोहल्ला, जैन मंदिर के पास, रामगढ़, अलवर, मो.: 9829250444, 9024083810, 8058576724 *(जनवरी)*

★ **आयुष जैन** पुत्र श्री अजीत कुमार जैन, जन्मतिथि 26.01.1993 (प्रातः 7.15 बजे), कद- 5'-4'', शिक्षा- बी.टेक., जॉब- व्यापार, गोत्र : स्वयं- आमेश्वरी, मामा- कोटिया, सम्पर्क : 4, सिविल लाइन, नियर गोपाल टॉकीज, अलवर, मो.: 8058576724 *(जनवरी)*

★ **कृष्ण कुमार जैन** पुत्र श्री पदम चंद जैन, जन्मतिथि 14.09.1991 (प्रातः 1.00 बजे, अलवर), कद 5'-8'', शिक्षा- बी.टेक. (कम्प्यूटर साईंस), व्यवसाय- जुनियर एसोसिएट, एस.बी.आई. अलवर, गौत्र : स्वयं- अठवरसिया, मामा- चौधरी, सम्पर्क : 2-क -292, शिवाजी पार्क, अलवर (राज.), मो.: 9413048598 *(फरवरी)*

★ **शुभम जैन** पुत्र श्री राकेश कुमार जैन, जन्तातिथि 11.03.1996 (प्रातः 6:20, मंडावर), कद- 5'-5'', शिक्षा- बी.ए., राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, व्यवसाय- जरी गोटा होलसेल ट्रेडिंग, आय- 6 अंकों में प्रति माह, गोत्र : स्वयं- कोटिया, मामा- वारंगडगिया, सम्पर्क : 77/167, अरावली मार्ग, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर, मो.: 9460707058, 9414067972 *(फरवरी)*

★ **नितिन जैन** पुत्र श्री सुभाष चन्द्र जैन, जन्ततिथि 24.08.1993, कद- 5'-10'', शिक्षा- सी.ए., व्यवसाय- आई.सी.आई.सी.आई. लोम्बार्ड जनरल इंश्योरेन्स, आय- 15 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं- नंगेश्वरिया, मामा- बोरडगियां, सम्पर्क : 7, गणेश कॉलोनी, झोटवाड़ा, मो.: *9460552620, 9887202583 (फरवरी)*

★ **रिषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्ततिथि 13.05.1995 (प्रातः 6 बजे, ब्यावर अजमेर), कद- 5'-6'', शिक्षा- बी.कॉम., पी.जी.डी.बी.ए., व्यवसाय- फाईनेन्स, कार्यरत- रिजनल क्रेडिट हेड आई.डी.एफ.सी. बैंक, जयपुर-अजमेर, आय- 6.5 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं- जनुथरिया, मामा- चौरबम्बार, सम्पर्क : *9460312001 (फरवरी)*

★ **विवेक जैन** पुत्र श्री कोमल प्रसाद जैन, जन्ततिथि 29.08.1988 (प्रातः 9:40 बजे, ग्वालियर), कद- 5'-8'', शिक्षा- बी.बी.ए., एल.एल.बी., नौकरी- नगर निगम ग्वालियर, पेथ काइन्ड पैथोलोजी (फ्रेंचाइजी), इको कार वास सोप, गोत्र : स्वयं- चौरबम्बार, मामा- लोहकरेरा, सम्पर्क : *हनुमान नगर, लश्कर, ग्वालियर, मो.: 9301122024 (मार्च)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 22.07.1992 (at Agra), Height : 5'-5", Education - M.Com, Occupation- Working as Sr. Accountant with Taj Vilas in Agra and drawing 3+ LPA, Gotra : Self- Janutharia, Mama- Baebare, Contact : 37/472, Nagla Padi, Dayal Bagh, Agra, Mob.: 9219219655, 7906973116 *(Jan.)*

★ **Prayansh Jain** S/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 27.02.94 (at 8:10 PM, Alwar), Height 5'-8", Education- B.Tech. (JECRC Jaipur), Occupation- IT Analyst in Tata Consultancy Services, New Delhi, Package- 10.5 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Badwasia, Contact : Sh. Prakash Chand Jain, Jain Tyres, 9, Bapu Bazar, Alwar. Mob.: 9829215414, 8005549651 *(Jan.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 29.06.1994 (at 9:20 am, Jaipur), Height : 5'-6", Education- BE (MBM) Jodhpur, MS (IIT Guhati), Job- Research Analyst, Gist Advisory, Mumbai, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Barolia, Contact : 202-A, Jagdamba Nagar, Heerapura, Jaipur, Mob.: 9413349336, 7357714499 *(Jan.)*

★ **Dikshant Jain** S/o Sh. Alok Jain, DoB 07.01.1994 (at 06.10 p.m., Jaipur), Height- 6'-1", Education- B.Com, L.L.B, D.T.L. (University of Rajasthan), Job/Profession- Advocate, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Barwasiya, Contact : 14, Ganga Path, Suraj Nagar (West), Civil Lines, Jaipur, Mob.: 9828115123, 9828012523, Email : alokad67@rediffmail.com *(Jan.)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Sanjay Jain, DoB 04.06.1994 (at 11:10 A.M., Jaipur), Height- 5'-7", Education- B.E. (E&C) from JECRC, Jaipur, Occupation- Family Business (S.R. Enterprises, C&F Agent & Super Distributor for Various Diagnostics & Health Care Companies), Gotra : Self- Barolia, Mama- Rajeshwari, Contact : B-18 & 19, Jai Jawan Colony Scheme No. 1st, Opp. Sanghi Farm, Tonk Road, Jaipur-3020018, Mob.: 9829012628, Ph.: 0141-4026021, Email : srindiaentp@yahoo.com *(Jan.)*

★ **Rohit Jain** S/o Late Sh. Pramod Jain, DoB 28.03.1994 (at 11:50 pm, Lacchmangarh, Alwar), Height- 172 cms., Education- B.Tech (Govt College, Udaipur), Job- Software Engineer (Metacube Software, Jaipur), Gotra : Self- Chowdbambar, Mama- Salawadia, Contact : Jain Petrol Pump, Alwar Road, Lacchmangarh, Mob.: 6350160386, Email : rohit1994jain@gmail.com *(Jan.)*

★ **Varun Jain** S/o Sh. Pradeep Jain, DoB 08.01.1990 (at 08:08 AM, Desuri, Pali District), Height- 5'-4", Education- B.A., LL.B. (Hons.), LL.M., Job- Assistant Manager, Corporate Legal AU Bank, Jaipur, Gotra: Maleshwari, Contact :

35, Veer Vihar, Queens Road, Vaishali Nagar, Jaipur- 302021, Mob.: 8003847897, Email : jain.varunnn@gmail.com *(Jan.)*

★ **Shrayansh Jain** S/o Late Sh. Sunil Jain, DoB 06.01.1994 (at 11:15 AM, Kherli Ganj, Alwar), Height- 5'-11", Education- Bachelor in Computers Application, Job- Sr. Assistant, Board of Revenue Ajmer, Gotra: Self- Nagaswaria, Mama- Chodhambar, Contact : Kiran Villa, Near Mathur Bhatta, Topdara, Ajmer, Mob.: 9649511008, 9413781308, 9460355313 *(Jan.)*

★ **Chandra Prakash Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 09.03.1987 (at 11:50 PM, Gwalior), Education- B.Com., ITI, Occupation- Business (Electrical Shop), Gotra: Self- Kotia, Mama- Maimuda, Contact : A-9, New Vivek Nagar, Behind Mela Ground, Thatipur, Gwalior, Mob.: 930999134, 9268731636, 7000626305 *(Jan.)*

★ **Vibhor Jain** S/o Late Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 12.04.1992 (at 5:55 AM, Jaipur), Height- 5'-10", Education- M.Com., C.S., UGC Net, Job- Manager Accounts, Food Corporation of India, Package- 9 LPA, Gotra: Self- Belanvasia, Mama- Kotia, Contact : Smt. Rachna Jain, 104, Vardhman Nagar (B), Ajmer Road, Jaipur, Mob.: 9414681290 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Arun Kumar Jain, DoB 20.11.1993 (at 11:45 AM, Jaipur), Height- 5'-10", Education- M.Com., MBA, Job- Presently Working Accenture, Noida, Gotra: Self- Rajnayak, Mama- Ledodia, Contact : 10/69, Swarn Path, Mansarovar, Jaipur-302020, Mob.: 9784498287 *(Jan.)*

★ **Ronak Jain** S/o Sh. Suresh Chand Jain, DoB 25.01.1994 (at 10:27 pm, Bhayandar, Mumbai), Height- 5'-8", Education- MBA in Finance, M.Com., B.Com., Job- Wealth Advisory in Edelweiss Broking Ltd., Mumbai, Gotra: Self- Rajoriya, Mama- Baderiya, Contact : A-305, Samriddhi Tower, Indralok Phase 8, Bhayandar (East), Mumbai-401105, Mob.: 9819391454, 9819327962, Email : rahul.jain902@gmail.com *(Jan.)*

★ **Nitish Jain** S/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 01.12.1991 (at 06:30 pm, Gangapur City), Height- 5'-10", Education- B.Tech., LLB, LLM (Gold Medalist), Occupation- Advocate, Rajasthan High Court, Gotra: Self- Badheriya, Mama- Sengarvasiya, Contact : 18, Akhil Nagar, Behind EHCC Hospital, Near Jawahar Circle, Jaipur-302017, Mob.: 7742752012, 9772935324, 8384935700 *(Jan.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Sh. Pradeep Jain, DoB 09.04.1989 (at 2:30 PM, Kota), Height 5'-11", Education- M.TECH. (Power System), University College of Engineering, Kota, Job- Export Engineer at Tesla Transformers (India) Limited, Bhopal, Contact : Behind Sarvodaya Convent School, Adarsh Colony, Kherli Phatak, Kota-324001, Mbo.: 8209471961, 9928888727, Email : neetajainkota1@gmail.com *(Jan.)*

★ **Ravi Jain** S/o Sh. Pradeep Jain, DoB 12.09.1986 (at 7:30 PM, Kota), Height- 5'-8", Education BE (Electrical), GyanVihar Engg College, Jaipur, Job- Engineer at Hind Power Construction Ltd. (managing Tonk, Kota, Jhalawar region), Income 7.5 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Barediya, Contact : Behind Sarvodaya Convent School, Adarsh Colony, Kherli Phatak, Kota-324001, Mob.: 8209471961(whatsapp), 9928888727, Email : neetajainkota1@gmail.com *(Jan.)*

★ **Mayank Jain** S/o Sh. Subhash Chand Jain, DoB 12.10.1993 (at 11:17 PM, Naugaon, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Tech. in Electrical Engineering, Occupation- Senior Software Engineer in Bottom Line, Banglore, Salary- 19 LPA, Gotra : Self- Sripat, Mama- Kotiya, Contact : 8, Gupta Colony, Jawahar Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9739748225, 6350393714, Email : jain.shashank3189@ gmail.com *(Jan.)*

★ **Rajesh Jain** S/o Sh. DalChand Jain, DoB 13.06.1993, Height- 5'-6", Education- MA, B.Ed., Occupation- PHED Department (Water Box), Income- 3-4 LPA, Gotra : Self- Gindorabakash, Mama- Dhati, Contact : Vasundhara Kutumb, Flat No. E-C-V-10, Main Tonk Road, Near Vatika, Bilwa, Jaipur-302022, Mob.: 9627416426, 8562868414, 8562848414 *(Jan.)*

★ **Ankit Jain** S/o Sh. Kuldeep Jain, DoB 18.12.1997 (at 8:55 am, Shri Mahaveerji), Height- 168 cms., Education- ITI Draftsman Civil Diploma Civil Engineering, Occupation- Larsen and Toubro, Civil Railway Track Pkg. (CTP-3R), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Nangesurya, Contact : B-76/C, Maruti Tanament Vastral Road, Odhav, Ahmedabad-382418, Mob.: 9638854354, 8320234250 *(Jan.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Sh. Ajay Kumar Jain, DoB 15.01.1995 (10:55 pm), Height- 5'-9", Education- Bachelor's in Commerce, Job- Working with SBI at Administrative Office, Jaipur, Income 8 LPA, Gotra : Self- Gindaudabaks, Mama- Chaudhary, Contact : D-15, Flat No. 101 & 102, Flora Apartments, Ganesh Marg, Bapu Nagar, Jaipur, Mob.: 9314130934, 9950371810, Email : anurag.jain1@hotmail.com *(Jan.)*

★ **Hritul Jain** S/o Sh. Raj Kumar Jain, DoB- 19.09.1993 (at 13:05 PM, Kota), Height 5'-7", Education- B.Tech. (Electrical Engineering), Occupation- Consultant in KPMG, Banglore, Package- 19 LPA, Gotra : Self- Dhati, Mama- Khair, Contact : 50/38, Rajat Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9887379710, 9079829868, Email : jainraj43@gmail.com *(Feb.)*

★ **Prashant Jain** S/o Sh. Subhash Chand Jain, DoB 18.09.1993 (at 08:05 AM, Kherli, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Tech (CS), PG Diploma (Advanced Computing), Occupation- Analyst Programmer, Fidelity International LTD. (FIL), Gurugram, CTC- Above 13 LPA, Gotra : Self- Bhadkolia, Mama- Chorbambar, Contact : 103/19, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414310994, 7014938851 *(Feb.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. T.C. Jain, DoB 04.01.1994, Education- MCA, Job : Software Engineer at Neosoft Pune, Gotra : Self- Athvarsiya, Mama- Baderya, Contact : Patel Nagar Mhuna Mandi Road Jaipur, Mob.: 9001533497, 7014658129 252 *(Feb.)*

★ **Ankur Jain** (Anshik Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.07.1989 (at 6:50 pm, Agra), Height- 5'-9", Education- Auto Eng. B.Tech (Mech.), M.Sc. (Phy.), B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, ICICI Lumbard General Insurance, Income- 5 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9258065928, 9045216301 *(Feb.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh.Ramesh Chand Jain, DoB 18.08.1990, Height- 5'-10", Education- MBA Marketing & HR, Occupation- Canara Bank Housing (Ltd.) Finance, Agra, Income 35,000/- Per Month, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Contact : 9258065928, 9045216301 *(Feb.)*

★ **Shashank Jain** S/o Sh. Anil Kumar Jain Bajaj, DoB 21.02.1992 (at 6:30 am, Agra), Height 5'-7", Education- MCA, Job- Working in Coforge (NIIT) at Greater Noida as a Senior Software Tester, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Rajeshwari, Contact : C-153, Subhash Nagar, Kamla Nagar, Agra- 282005, Mob.: 9634074088, 9927463181, Email : aniljainbajaj@gmail.com *(Feb.)*

★ **Divesh Jain** (Manglik) S/o Sh. Gian Chand Jain, DoB 29.06.1994 (at 6:15 PM), Height- 5'-3", Education- Post Graduate (MCA) IGNOU, Occupation- Senior IT Engineer at Taj Hotels Delhi, Gotra : Self- Mimunda, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ E-58, Raj Nagar Part-2, Dada Dev Road, Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9891394006, 9718869534 *(Feb.)*

★ **Drashya Jain** S/o Sh. Dharmendra Kumar Jain, DoB 17.04.1995 (at 09:43 am, Agra), Height- 5'-8", Fair Colour, Education- B.Com., Profession- Supervisor in Glassware Factory, Gotra : Tijariya, Contact : 72A, Chhoti Chhapeti, Loha Mandi Chauraha, Payal Medical Store, Firozabad-283203, Mob.: 9870802127, 7055933746 *(Feb.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 12.09.1992 (at 8:31 am, Jaipur), Height 5'-7", Education- M.Tech. (NIT, Bhopal) & Pursuing P.H.D. IIT Hyderabad, Occuption- IC Layout Designer in Synopsys Hyderabad, Package- 32 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Bayaniya, Contact : Ward No. 11, Jain Colony, Kajodi Ka Mohalla, Kherli (Alwar), Mob.: 9413907815, Email : arpitkherli@gmail.com *(Feb.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Pushpendra Jain, DoB 14.03.1994 (at 9:12 am, Agra), Height 5'-11", Fair Color, Education- B.Com., Occupation- Own Business, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Maimuda, Contact : Jain Readymade and Book Store, Midhakur (Agra), Mob.: 9410006648, 8445463430 *(Feb.)*

★ **Akash Palliwal (Sunny)** S/o Sh. Anil Kumar Palliwal, DoB 10.07.1992, Height 5'-8", Fair Color, Education- B.Tech. (Electrical Engg.), Occupation- Custom Inspector / G.S.T. (Ahmedabad), Gotra : Self- Kotia, Mama- Nangesuria, Contact : Rewa Mill, Nahar Road, Gangapur City-322201 (Raj.), Mob.: 9983629729 *(Feb.)*

★ **Vijay Kumar Jain** (Divorced) S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 11.11.1986 (at 11:30 am, Hindaun City), Height 5'-8", Education- MCA

(IGNOU) From (IIIM College), Job- Triazine Software Pvt. Ltd. Working in Udyog Bhawan, Govt. of Rajsthan, Package- 8.50 LPA, Gotra : Self- Nangesuriya, Mama- Rajoriya, Contact : 202, Amrit Nagar, Iskcon Road, Jaipur, Mob.: 9460441986, 9588269389, Email : jain.vijay605@gmail.com *(Feb.)*

★ **Rishi Jain** S/o Sh. P. K. Jain, DoB 22.01.1991 (at 1:03 pm), Height- 5'-7", Fair Complexion, Education- B.Com., Occupation- Xerox, Computer and All Type of Printing, Gotra : Budelwal, Contact : 60, Saraogyan, Bhimsen Mandir Road, Mainpuri -205001 (UP), Mob.: 9411062043, 7417183783, 9634425990 *(Feb.)*

★ **Rajat Jain** S/o Dr. Navneet Jain, DoB 23.01.1994 (at 06:45 pm), Height- 5'-9", Education : B.Tech. (Mechanical) from IIIT DM, Jabalpur in 2016, Job- Currently Working in Bank of Braoda as a Business Associate, Since May 2019, Mandrayal, Dist. Karauli-322251, Gotra : Self- Kotia, Mama- Chodhary, Chorrbambar, Contact : Vill. Post Harsana,Tehsil- Laxmangarh, Dist. Alwar-321607, Mob.: 6376474151, 9887627515, 8920847221, Email : jainrajat2811994@gmail.com *(Feb.)*

★ **Kapil Kumar Jain** S/o Sh. Davendra Kumar Jain, DoB 15.06.1988 (at 7:09 am, Alwar), Fair Colour, Height- 5'-7", Education- Diploma (Mech. Engg.), Service- Engineer in a Company, Alwar, Package- 3 LPA, Gotra : Self- Balanvasia, Mama- Ladodia, Contact : Harsana, Alwar, Mob.: 8802118298, Email : rohit_jain1012@rediffmail.com *(Feb.)*

★ **Jayant Jain** S/o Sh. Bibudhesh Kumar Jain, DoB 07.12.1994 (at 8:03 am, Alwar), Height- 5'-10", Education- B.Des. (IIT Guwahati), MBA (IIM Ahmedabad), Occupation- Product Manager Flipkart Banglore, Package 51 Lakh (CTC), Gotra : Self- Nangeshwaria, Mama- Kashmiria, Contact : 4/202, SFS, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9314502046, 9829015648 *(Feb.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Subhash Jain, DoB 25.06.1995 (at 4:20 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- B.Com., PGDM from RIIMS Pune, Occupation- Working in FMCG Company at Jaipur, Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Badwasiya, Contact : Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 9414073201 *(Feb.)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Manoj Mohan Jain, DoB 08.06.1994 (at 11:55 am, Agra), Height- 5'-7", Education- Chartered Accountant, Anuj Plaza, Belanganj, Agra, Contact : Sector 6 C/612, Avas Vikas Colony, Agra, Mob.: 7060978292 *(Feb.)*

★ **Kushal Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 23.12.1991 (at 07:50 am), Height- 5'-8", Education- B.Tech in Information Technology (Hindustan Institute of Technology & Management), Agra, Job- Application Module Lead at Telus International Pvt. Ltd., Oxygen Park, Sector 144, Noida, Gotra : Self- Kotia, Mama- Garg, Contact : 29, Prem Anand Kunj, Brij Bihar Colony, Kamla Nagar, Agra, Mob.: 9897717596, 6395524546, Email : vinodkumarjainagra@gmail.com *(Feb.)*

★ **Jitendra Jain** S/o Late Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 08.07.1992, Height- 5'-8", Education- ITI, Polytechnic and B.Tech, Job- Teaching in College, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Bhorindia, Contact : A-147, Vaishali Nagar, Alwar, Mob.: 6376042300, 9887116757 *(Feb.)*

★ **Sourabh Jain** S/o Sh. Prem Jain, DoB 11.07.1995 (at 1:55 pm, Kota), Height- 6 Feet, Education- MCA, Occupation- IOS Software Developer at IIT Powai, Mumbai, Gotra : Self- Athwarsiya, Mama- Maimuda, Contact : Shreenath Oysis, Flat No. 1202, Kerli Phatak, Kota-324002, Mob.: 7877022362, 8209333801, Email : jyoti.jain970@gmail.com *(Feb.)*

★ **Prateek Jain** S/o Sh. Anil Jain, DoB 16.04.1995 (at 9:00 pm, Sawai Madhopur), Height- 5'-6", Education- BE (Computer Science) NIT, Jalandhar, Occupation- Engineer, Gurgaon, Gotra : Self- Amiya, Mama- Rajoria, Contact : 9414287580 *(Feb.)*

★ **Prashant Jain** S/o Sh. Jinesh Chand Jain (Sunari wale), DoB 28.01.1997 (at 11:15 am, Alwar), Height 5'-9", Fair and Attractive, Gotra : Self- Bhadkoliya, Mama- Baroliya, Education- B.Tech. (Electrical), Occupation- Assistant Manager S.B.I. Dausa (Raj.), Salary 12 Lacs Yearly, Contact : M/s. Rajendra Kumar Manish Kumar Jain, C-52, Grain Mandi, Mandawar, Mob.: 9982069312, 9782766368, Email : Er.jainprashant@sbi.co.in *(March)*

★ **Ankur Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.08.1989 (at 6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education- Diploma in Automobile Engineering,

B.Tech. (Mech.), M.Sc. (Physics), B.Ed., Occupation- Manager- Claim Service, ICICI Lombard, Agra. Income 6 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengerwasia, Contact : 9258065928 *(March)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 18.07.1990 (Agra), Height 5'-9", Education MBA, LLB, Occupation- Officer- Can Fin Homes Ltd. (Sponsor Canara Bank), Agra, Income 5.60 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengerwasia, Contact : 9258065928 *(March)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Kalu Ram Jain, DoB 25.01.1995 (at 7:20 pm), Height 5'-4", Occupation- Security Officer at ESIC Ministry of Labour and Employment, Govt. of India, Pune, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Baroliya, Contact : Mubarikpur, Alwar, Mob.: 9982605334, 9468620649 *(March)*

★ **Ajit Jain**, S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.06.1990 (at 3:55 PM, Bharatpur), Height- 5'-10", Education-B.Tech (VIT Vellore), Presently Working as Assistant Manager in Canara Bank, Bayana, Gotra : Self- Chourbambar, Mama- Borandangya, Contact : (1) Smt. Pushpa Jain, Bharatpur (Raj.), Mob.: 9785122157, (2) Ashwani Jain, Bharatpur (Raj.), Mob.: 6350427579 *(March)*

★ **Abhishek Jain** S/o Late Sh. Devendra Kumar Jain, DoB 21.09.1993 (at 12:55 pm, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech (EC), Occupation- Sr. Engineer, Havells India Ltd., Alwar, Package- 5-6 LPA, Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Chorambaar, Contact : Plot No. 205, Scheme No. 1, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 8000669150, Email : abhijain2109@gmail.com *(March)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Roop Chand Jain, DoB 05.05.1993 (at 8:16 am, Agra), Height- 5'-7", Education : MBA (Finance), Wheatish Complexion, Occupation- Relationship Manager, Fullerton India Credit Company Ltd., Income- 4 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Khair, Contact : 5E/18, Ashok Vihar, Janta Quater Kedar Nagar, Shahganj, Agra, Mob.: 9358685310, Whatsapp : 8077581085 *(March)*

★ **Abhishek Jain** (Anshik Mangalik, Divorce) S/o Sh. Kaushal Kishor Jain, DoB 26.11.1987 (at 10:00 pm, Raya, Distt. Mathura), Height- 5'-7:, Wheatish Colour, Education- CA, M.Com, LLB, CCA, Gotra : Self- Danduriya, Mama- Bahattariya, Occupation- Self Employed, 1. RNKA & Co. (Chartered Accountant), 2. Taxzeal Consultant Private Limited, Contact : 7900296296, 7351296296 *(March)*

★ **Rajat Jain** S/o Late Sh. Yatendra Kumar Jain, DoB 17.12.1990, Height- 5'-4", Complexion Fair, Education- MS Colorado State University, Fort Collins, Colorado- USA, B-Tech, Anand Engineering College, Agra, Job- L&T Technology Services Pineville, Louisiana, Income 45 LPA, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Chandpuria, Contact : HIG B-2, Indra Puram Shamshabad Road, Agra, * 4503, Queen Elizabeth CT, Apt-262, Alexandria, Louisiana, Mob.: 9990924659, 9884315705, +19702159471 *(March)*

* * * * *

पत्रिका सहायता

★ **श्री संजय जी जैन, नितिन जी जैन, विपिन जी जैन,** डब्ल्यू जेड-561, पालम गांव, नई दिल्ली ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री नरेश चन्द जी जैन की द्वितीय पुण्यतिथि पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. डी-2697)*

★ **श्री नीरज जी जैन** पुत्र श्री सतीश कुमार जैन (मौजपुर वाले), डी-81, अम्बेडकर नगर, अलवर ने चि. मोहित जैन पुत्र श्री संजय जैन संग दिपाली जैन पुत्री श्री जितेन्द्र जैन के शुभ विवाह दि. 05.02.2022 को सम्पन्न होने पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 500/- सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी-2523)*

पत्रिका सदस्यता

3177. Sh. Vinod Kumar Ji Jain (Kanjoli Wale), 42, Arjun Nagar South, Gopalpura Bypass, Jaipur-302015, Mob.: 9314844803 *(CR D-2696)*

3178. Sh. Bharat Bhushan Ji Jain, Flat No. A-1/601 (6th Floor), Mayank CGHS, Sector 6, Dwarka, New Delhi-110075 *(CR D-2521)*

3179. Sh. Kishore Kumar Ji Jain, R/335, Rasoolpur, Near Model School, Barabanki-225001 (U.P.) *(CR D-2522)*

3180. Sh. Sandesh Ji Jain S/o Sh. Harish Chand Jain, Near Sr. Secondary School, Ucchain, Dist. Bharatpur *(CR D-2524)*

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

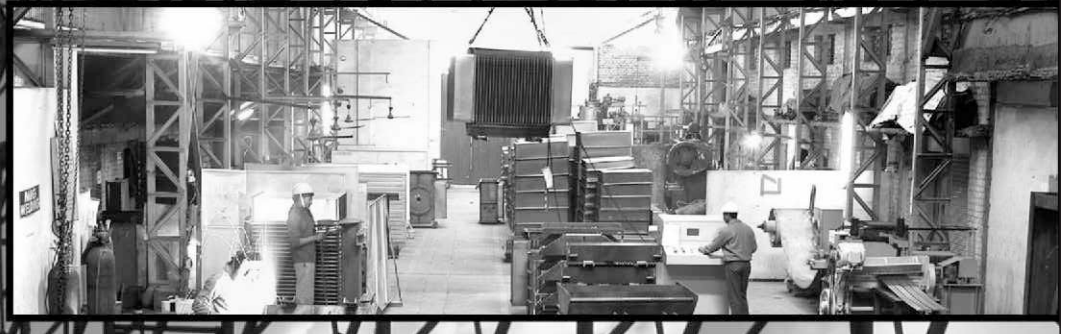

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9690441107 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Shree Vimal Silica Traders
★ S.B. Jain Mineral Enterprises

BIMAL CHAND JAIN
(Reta Wala)

ANKIT JAIN

AKHIL JAIN

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क :
Bimal Jain - 09837253305
Ankit Jain - 09837478564
Akhil Jain - 09690441107

RNI NO. RAJHIN/2012/47438

Postal Registration No. JAIPUR CITY/410/2022-24

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Your perfect home is now at a landmark address.

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

16 Smart Home · 3 BHK · Vastu Friendly

Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

If Undelievered, please return to :
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी- अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।